R.N.I. No.: UTTHIN/2015/63078

डाक पंजीयन :- UA/DO/DDN/25/2021-2023

श्रमयोग पत्र

सेवा में

.....

.....

.....

.....

वर्ष : 07 अंक : 11 (हिन्दी मासिक) देहरादून, 01 फरवरी 2022 मूल्य - 5.00 ₹ प्रति पृष्ठ-8 वार्षिक मूल्य -100 ₹

मंथन–2022

मंथन से निकली भविष्य की राह

वार्षिक कार्ययोजना पर चर्चा करते मंच व टीम श्रमयोग के सदस्य।

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

26 से 31 जनवरी तक अल्मोड़ा जिले के सल्ट ब्लॉक के गिगड़े गाँव में टीम श्रमयोग व रचनात्मक महिला मंच का मंथन कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंथन के दौरान श्रमयोग व मंच के कार्यक्रमों, अभियानों व गतिविधियों की विस्तृत समीक्षा की गई व 2022-23 के लिये कार्ययोजना तैयार हुई।

मंथन के पहले चरण में सभी स्वयं सहायता समूहों से प्राप्त सुझावों के आलोक में वर्ष 2022-23 की कार्य योजना तैयार की गई। मंच द्वारा संचालित श्रम-जन स्वराज अभियान व प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान की समीक्षा के दौरान तय किया गया कि रचनात्मक महिला मंच व बाल मंच की मजबूती व विस्तार के काम को और सशक्त किये जाने की आवश्यक्ता है अत: सामाजिक पूंजी बढ़ाने के इस कार्य को सामाजिक पूंजी बढ़ाओ अभियान के रूप में स्थापित किया जाय। श्रम जन स्वराज अभियान व प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान के प्रत्येक अवयव को मजबूत करने का निर्णय भी हुआ।

मंथन के दौरान श्रम-उत्पाद व श्रम-बाजार को मजबूत करने पर भी चर्चा हुई। यह भी तय किया गया कि पंचायती राज व्यवस्था की मजबूती के लिये यह जरूरी है कि मंच उसमें सीधे प्रतिभाग करे। मंच की सदस्याओं का कहना था कि पंचायतों के अगले चुनावों में मंच को अधिक से अधिक पदों पर चुनाव लड़ना चाहिये। उसके लिये अभी से तैयारी करने की जरुरत है। श्रमयोग पत्र के विस्तार पर बात हुई। कहा गया कि श्रमयोग पत्र श्रमयोग समुदाय के बीच संवाद का महत्वपूर्ण जरिया बन रहा है। इसे सशक्त करने की आवश्यकता है।

दूसरे चरण मे 30 जनवरी के दिन वर्ष 2022-23 के लिये विस्तृत कार्ययोजना रचनात्मक महिला मंच की सल्ट व नैनीडांडा इकाई की कार्यकारिणी सदस्यों के सम्मुख अनुमोदन के लिये रखी गई। विस्तृत चर्चाओं के बाद मंच द्वारा वार्षिक कार्ययोजना अनुमोदित की गई।

तीसरे चरण में टीम श्रमयोग की मजबूती के लिये विस्तार से चर्चा हुई। जिसके अन्तर्गत विभिन्न टूल्स के माध्यम से श्रमयोग टीम सदस्यों के दृष्टिकोण, मनोवृति व व्यवहार पर चर्चा हुई। श्रमयोग की मजबूती के लिए विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई। मंथन कार्यक्रम का समापन सिसवाड़ी गाँव के निकट रामगंगा नदी के किनारे पिकनिक के साथ हुआ।

संदेश देने में सफल रहा फोक मीडिया कैम्पेन

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद, भारत सरकार एवं स्पेक्स, देहरादून के सहयोग से अल्मोड़ा जिले के सल्ट एवं पौड़ी गढ़वाल जिले के नैनीडांडा विकास खण्ड के गाँवों में संचालित फोक मीडिया कैम्पेन कार्यक्रम का समापन हो गया। इस अवसर पर स्पेक्स के सचिव डॉ0 बृजमोहन शर्मा ने कहा कि नुक्कड़ नाटक लोक माध्यमों का एक कारगर तरीका है जो समाज को जागरुक करने के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त है। उन्होंने बताया कि सल्ट व नैनीडांडा विकास विकास खण्ड में नुक्कड नाटकों के लिए प्रशिक्षित टीम द्वारा गाँव-गाँव में विगत 2 माह से नुक्कड नाटकों के माध्यम से ई-कचरा प्रबन्धन, पर्यावरण संरक्षण, बाल पोषण, नशा मुक्ति आदि पर जागरुकता अभियान चलाया जा रहा था।

इस दौरान ग्रामीणों में इस कार्यक्रम को लेकर काफी उत्सुक्ता दिखी, कैम्पेन के दौरान ग्रामीणों ने बताया कि नुक्कड़ नाटकों ने हमें ई-कचरे, जलवायु परिवर्तन, बाल पोषण जैसे विषयों पर सोचने को मजबूर किया। कार्यक्रम की स्थानीय समन्वयक संस्था श्रमयोग के राकेश ने बताया कि गांवों के साथ-साथ इस कार्यक्रम को स्कूलों व कॉलेजों में भी आयोजित कियाा गया। जिसमें राजकीय इण्टर कॉलेज झीपा, राजकीज महाविद्यालय मानिला तथा, आई.टी.आई सल्ड महादेव शामिल थे। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों को बार-बार आयोजित करने की आवश्यकता है, जिससे समाज में वैज्ञानिक चेतना का विकास होगा।

नुक्कड़ टीम में कविता, दीपक, सुनील, कमलेश, प्रिती, अनीता, दिव्या, ब्रिजेश, राकेश शामिल रहे।

नैनीडांडा में नुक्कड़ नाटक करते टीम के सदस्य।

हमारी पाती

प्रिय साथियो,

श्रमयोग पत्र के सातवें वर्ष का इग्यारवां अंक लेकर हम आपके बीच हैं। सामुदायिक पत्रकारिता को मजबूत करने व सामुदायिक आवाजों को मंच देने के उद्देश्यों के साथ हम अपने मिशन पर अग्रसर हैं।

साथियो, पाँच राज्यों में चुनावों का शोर पूरे ऊफान पर है। यदि उत्तराखण्ड राज्य की बात करें तो चुनावों को मुद्दों से भटकाने के लिये राजनैतिक दलों ने पूरा जोर लगा दिया है। जाति व धर्म के गुणा-भाग से चुनाव को निपटाने की पूरी तैयारी है। पर आम जनता के मुद्दे अपनी जगह खड़े हैं। पीने के लिये साफ पानी उपलब्ध नहीं है। अस्पताल हैं नहीं। जहाँ हैं, वहाँ पर डॉक्टर व दवा नहीं हैं। घर-घर नल हैं पर जल नदारद है। राज्य में कुपोषित बच्चों की फौज बढ़ रही है। टैब बट रहे हैं पर नैटवर्क का कहीं पता नहीं है। उत्तराखण्ड राज्य का 86 प्रतिशत हिस्सा पर्वतीय है। वहाँ सड़कें सुरक्षित नहीं हैं, थोड़ी बारिश और रास्ते बन्द। इस वजह से महिलाओं द्वारा बच्चों को सड़को पर जन्म देने की खबरें भी आती रहती हैं। महिलाओं को चारा व ईंधन एकत्र करने में आधा दिन लग जाता है। चारा एकत्र करने के दौरान महिलाओं की पेड़ो से गिरकर मरने की खबरें आती रहती हैं। बाघ, गुलदार व अन्य वन्य जीव एक तरफ आंगन से बच्चों को उठा रहे हैं वहीं दूसरी ओर ईंधन व चारा एकत्र करने के दौरान जंगलों में महिलाएं वन्य जीवों के हमले में जान से हाथ धो रही हैं। जंगली जानवरों के आतंक से खेती चौपट हो गई है। आवारा पशुओं के घूमते झुण्डों ने ग्रामीण जन-जीवन को बाधित कर दिया है। युवा बेरोजगार हैं और शहरों में औने-पौने दामों पर अपना श्रम बेचने को विवश हैं। मुद्दे और भी हैं।

पर चुनाव के मुद्दे अलग हैं। धर्म व जाति के प्रतीकों को सब मुद्दों के ऊपर स्थापित करने का प्रयास हो रहा है। लोकतन्त्र में चुनाव जनता के लिये महत्वपूर्ण अवसर है। लगता तो यही है कि जनता अपने मुद्दों पर कायम है और चुनाव में वोट के द्वारा अपने उपयुक्त प्रतिनिधियों का चयन करेगी।

साथियो, श्रमयोग पत्र हमारे समुदाय के सदस्यों के बीच संवाद का महत्वपूर्ण जरिया है। श्रमयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता आन्दोलन को मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सबके ऊपर है। हम श्रमयोग पत्र का संचालन सिर्फ पाठकों द्वारा अदा किये जाने वाले सदस्यता शुल्क से करते हैं व गैर-लाभकारी समाचार पत्र हैं। पत्र की वार्षिक सदस्यता ₹100 (डाकखर्च सहित) व आजीवन सदस्यता ₹1000 है। आपके द्वारा ग्रहण की गयी पत्र की सदस्यता सामुदायिक पत्रकारिता के उत्थान की इस मुहिम को मजबूत करेगी। बीते वर्षों में आपसे मिले हर तरह के सहयोग के लिये आभार।

जिन्दाबाद!

भीतर के पृष्ठों में

- गांव घर की खबर – पृष्ठ 2
- मेरा सफर–15 – पृष्ठ 3
- ढाई आखर – पृष्ठ 3
- प्राकृतिक चिकित्सा–रसाहार – पृष्ठ 5
- मनरेगा के बजट में कटौती क्यों – पृष्ठ 7
- मानव सभ्यताओं का ज्ञान–विज्ञान–2 – पृष्ठ 8

मौसम का हाल

मौसम विभाग के अनुसार फरवरी माह में अनेक क्षेत्रों में हल्की से भारी बारिश होने की सम्भावना है। ऊँचाई वाले इलाकों में बर्फ पड़ सकती है।

फरवरी माह-सावधानियाँ

बाहर से घर वापस लौटने पर साबुन से हाथों को धोयें। घर से बाहर मास्क अवश्य पहनें। साफ-सफाई का विशेष ध्यान रक्खें। ठण्ड के दिनों में प्यास कम अनुभव होती है, पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ पानी पियें। अनेक क्षेत्रो में कोहरे व पाले की वजह से मार्ग दुर्घटनाओं का भय बना रहता है, वाहन सम्भल कर चलायें।

फरवरी माह में विशेष दिवस

05 फरवरी	–	वसन्त पंचमी
12 फरवरी	–	चार्ल्स डार्विन दिवस
14 फरवरी	–	संत वैलेन्टाइन दिवस
22 फरवरी	–	विश्व स्काउट दिवस
26 फरवरी	–	टीम श्रमयोग बैठक
27 फरवरी	–	श्रम सखी बैठक
28 फरवरी	–	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

सम्पादकीय

मंथन–2022

'पूर्ण विकेन्द्रीकरण व मजबूत संकलन', यही वह विचार था जो इस बार के मंथन से निकला। सभी साथियों ने श्रमयोग के संचालन से लेकर, अभियानों, कार्यक्रमों व गतिविधियों के संचालन तक में विकेन्द्रीकृत व्यवस्था पर जोर दिया। सभी का कहना था कि विकेन्द्रीकृत व्यवस्था सबको कार्य करने का मौका देने के साथ–साथ सबकी जवाबदेही भी तय करेगी। इसके साथ ही साथ हर स्तर पर संकलन पर भी जोर दिया गया।

'सामाजिक पूंजी बढ़ाओ अभियान' का प्रारम्भ इस मंथन की एक और उपलब्धि रही। रचनात्मक महिला मंच व बाल मंच की मजबूती व विस्तार के लिये एक अलग अभियान की आवश्यक्ता लम्बे समय से महसूस की जा रही थी। मंच की त्रैमासिक बैठकों में भी इस पर चर्चाएं हो रही थीं। अब तक यह कार्य श्रम–जन स्वराज अभियान व प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान का ही हिस्सा था। मंच के कार्यकारिणी सदस्यों ने नये अभियान के लिये पूरा समर्थन व्यक्त किया।

मंथन कार्यक्रम में श्रमयोग की मजबूती पर भी विस्तार से चर्चा हुई। कार्यो के निष्पादन में आने वाली चुनौतियों पर चर्चा हुई। टीम श्रमयोग की क्षमता वृद्धि के लिये विस्तृत कार्ययोजना बनाने के लिये एक तीन सदस्यीय समिति भी गठित की गई, जो आगामी 28 फरवरी तक अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। कोविड काल की परिथितियों की वजह से बाल मंचो के साथ गतिविधियाँ लम्बे समय से बाधित हैं। तय किया गया कि बाल मंचो को सक्रीय करते हुए उनके साथ पूरी मजबूती से काम किया जायेगा।

इस बार मंथन में यह भी दिखा कि रचनात्मक महिला मंच लोक राजनीति को लेकर न सिर्फ पुख्ता समझ हासिल कर रहा है बल्कि परिपक्वता से उस दिशा में आगे बढ़ रहा है। मंच द्वारा एक मत से यह कहना कि 2024 का पंचायत चुनाव सल्ट विकास खण्ड की सभी 138 पंचायतों में पूरी मजबूती से लड़ा जायेगा एक अलग कल का आगाज लगता है।

कुल मिलाकर मंथन के दौरान बहुत सी सार्थक चर्चाएं हुई, भविष्य के लिये स्पष्ट रोड मैप तैयार किया गया व 'समुदायवाद जिन्दाबाद' नारे के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लिया गया।

पाठकों के लिए

श्रमयोग पत्र में अपने प्रिय पाठकों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये **'गांव घर की खबर'** नाम से स्तम्भ प्रकाशित किया जाता है। आप समाज, देश, गांव, खेती, राजनीति, मानव मूल्य आदि किसी भी विषय पर अपनी बेबाक राय हमें भेजें। हमें इसे प्रकाशित करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। विचार कभी भी दबाए नहीं जाने चाहिये, इन्हें शब्द रूप दें।

–सम्पादक

श्रमयोग समुदाय की सदस्यता ग्रहण करें।

साथियों श्रमयोग आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही गतिविधियों का संचालन करता है। हम किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से किसी तरह की आर्थिक मदद प्राप्त नही करते है। अत: अपने अन्य साथियों को भी श्रमयोग समुदाय की सदस्यता लेने हेतु प्रेरित करें। सदस्यता शुल्क रू0 200/– वार्षिक है। प्रत्येक सदस्य तक ''श्रमयोग पत्र'' डाक द्वारा निशुल्क भेजा जायेगा। सदस्यता आवेदन पत्र के लिये आप shramyogcommunity@gmail.com पर पत्र भेज सकते है। श्रमयोग की गतिविधियों को जानने के लिये www.shramyog.org को देखें।

गांव घर की खबर

वार्षिक नियोजन बैठक सम्पन्न

साथियों नमस्कार !

सभी साथियो को पता है की कोविड की वजह से तीसरी लहर चल रही है। हर गाँव घर में परिवारों में बुखार, गले में दर्द व खाँसी हो रही है। सभी तीसरी लहर को ध्यान में रखते हुए अपनी सुरक्षा खुद कर रहे हैं। यह बड़ी अच्छी बात है। जनवरी की बैठकें शारीरिक दूरी बनाकर अच्छे से हर समूह में हो गई हैं।

जनवरी की 30 तारीख को हिनौला ऑफिस में टीम श्रमयोग, रचनात्मक महिला मंच सल्ट व नैनीडांडा के पदाधिकारियों व श्रम सखियों की बैठक की गई। जिसमें सभी ने अपनी–अपनी बात रखी और रचनात्मक महिला मंच को मजबूत बनाने की बात कही। टीम श्रमयोग के भाई–बहिनों ने आगामी योजना के प्रस्तुतिकरण दिये। मंच द्वारा वार्षिक योजना अनुमोदित की गई। श्रमयोग परिवार के भाई–बहिन लगन व मेहनत से हर गाँव की महिलाओं को अपनी हक की लडाई लड़ना व आगे बढ़ने के लिए हर प्रयास कर रहे हैं। लगातार परिश्रम कर रहे हैं।

60 साल से उपर वालों को टीके की तीसरी डोज लगना शुरू हो गई है। सभी से निवेदन है की जरूर टीका लगाऐं और स्वास्थ्य का ध्यान भी जरूर देना हैं। क्योंकि अभी ढंड जाने का नाम नहीं ले रही है। तो सभी अपना ध्यान रखें। निवेदन है कि ठण्ड से बचाव करें। बच्चों व बुजर्गो का ध्यान दें। मॉस्क जरूरी है।

अब खेती का काम भी शुरू होने वाला है अभी लोग मिर्च बोऐंगे भंगजीरा, धनिया, जीरा सभी बीज बायेंगे। धन्यवाद।

निर्मला देवी, कोट जसपुर

गोबिंदी बुआ ने बनाया सीसोंण का साग

इस बार ठंड कुछ अधिक है। आजकल के दिनों में सीसोंण (बिच्छू घास) का साग खाने का अलग ही मजा है। खासकर जिस परिवार में बुजुर्ग हैं। क्योंकि बुजुगों के होने से बार–बार पारंपरिक चीजों पर चर्चा होती रहती है और इसी तरह हमारे घर में भी सीसोंण यानी बिच्छू घास की बात आयी। गोबिंदी बुआ का कहना था कि हम लोग पहले सर्दी के मौसम में बिच्छू घास की सब्जी और मंडुवे की रोटी में अपना गुजारा करते थे। कभी इस सब्जी को छापड़ (चावल, गहत, भट्ट को मिलाकर बनाया जाने वाला भोजन जिसे गाजौड़ भी बोलते हैं) कभी छछिया (झंगोरे को कड़ी के साथ बनाना) के साथ खाते थे।

हमने भी सब्जी बनाने की सोची, शाम को गोबिंदी बुआ बिच्छू घास लेने गयी। पहले उन्होंने एक लकड़ी ली उसमें आगे से चीरा लगाया ताकि बिच्छू घास को पकड़ सकें (उसमें बारीक कांटे होते हैं), और रखने के लिए पारंपरिक बांस की बनी छापड़ी ली। सब्जी बनाते–बनाते बुआ ने हमें कहानियां भी सुनाई, जो मुझे और बच्चों को बहुत पसंद आयी। उनका कहना था कि हमारे समय में तो बिच्छू घास भी मुश्किल से मिलता था। लोगों के पास खाने के लिए कुछ अधिक होता नहीं था तो वे बिच्छू घास की सब्जी ही अधिक खाते थे, जिसके कारण इसकी कमी होती थी। किसी दूसरे के खेत का नहीं लाते थे। सब अपने–अपने खेतों से लाते थे। हम लोग ऐसे ही अपनी गुजर–बसर करते थे। उस बिच्छू घास की सब्जी और जौ की रोटी में ही ताकत थी। आज के समय का खान–पान तो काफी मिलावटी है, जिसको खाकर हम सब बीमारियों को न्यौता दे रहे हैं। पर हमें सर्दियों में तो कम–से–कम इसकी सब्जी बनानी चाहिए, और बच्चों को भी खिलानी चाहिए।

सुनीता देवी, सचिव, र0म0मं0

गुजर गया जमाना

सभी को मेरा नमस्कार। इस माह मैं और आसना कफल्टा में बैठक करने गये। वहां पर गठित बुराँश स्वयं सहायता समूह का परिचय सत्र चल रहा था। सभी सदस्याओं ने अपना परिचय दिया। उनमें से एक सदस्या उमा देवी जी ने परिचय देते हुए अपनी शादी के बारे में बताया कि पुराने जमाने में भी मेरा प्रेम विवाह था। मेरे पति मेरे लिए समोसे, ब्रेड–पकोड़ा आदि लाते थे। वो मुझे बहुत पसंद थे। किंतु शादी के बाद आज पूरी जिंदगी गोबर ढोते–ढोते चली गयी। न कभी कहीं गयी, न कुछ सीखा, बस इसी तरह जिदगी गुजार दी। अब हमारे घर में दो बुजुर्ग महिलायें हैं, उन्हीं की सेवा करती हूँ जिस कारण अब भी कहीं नहीं जा सकती। पर अब इस समूह के माध्यम से हमें कुछ नया सीखने को मिले तो बहुत अच्छा लगेगा।

उनकी बातों को सुन कर मुझे मेरे दिन याद आने लगे। शादी के बाद 15 वर्ष मैंने भी तो ऐसे ही निकाल दिये। लेकिन आज श्रमयोग की वजह से मुझे इतना कुछ सीखने को मिल रहा है।

नंदी देवी, श्रम सखी, चांच

बसंत पंचमी की यादें

आसना

बसंत ऋतु को ऋतुराज होने का दर्जा मिला हुआ है। इसलिए बसंत ऋतु को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। बसंत ऋतु में भाँति–भाँति के पुष्प खिल उठते है। सरसों, गुलमोहर, चंपा, सुरजमुखी और गुलाब के पुष्पों के सौन्दर्य से मन पुल्कित हो जाता है। रंग–बिरंगी तितलियाँ और मधुमंखियाँ सौन्दर्य बिखेरती हैं। इनकी सुन्दरता अद्भुत होती है। मैं अपने गाँव की देवकी देवी जी से बात कर रही थी। बात करते–करते वो मुझे बंसन्त माह की पुरानी यादें बताने लगीं।

उन्होंने बताया कि जब गाँव में सड़क नहीं थी। तब लोग रामनगर बसंत का मेला देखने जाते थे। मैं चौंक गई और बोली, रामनगर इतनी दूर पैदल! क्योंकि वर्तमान मे इतना पैदल जाने की शायद ही कोई सोचे। गाँव से रामनगर की दूरी 70 किलोमीटर तो होगी ही। इतना सोचते–सोचते मैंने पूछा–तो वो लोग आते कब थे। उन्होंने बताया कि वह रामनगर से अगले दिन सुबह चलते थे और शाम होने से पहले गाँव पहुँच जाते थे।

उन्होंने आगे बताया– हमारे क्षेत्र में भी एक मेला लगता था। हम लोग तैयार होकर मेले में जाते थे। मेले में जाने की तैयारी कई दिन पहले से ही शुरू हो जाती थी। इन मेलों के कारण हम एक दूसरे से मिलते थे। घर के कामों की भागदौड़ के बीच हम महिलाओं को भी एक दिन घूमने का मौका मिल जाता था। गाँव से मेले जाते–आते समय चलते–चलते लोग अपने जीवन की बातें बताते थे। अपने दुख–सुख व जिन्दगी में क्या चल रहा है साझा करते थे। सारी बातें एक–दूसरे को बताते चलते थे। मेलों की वजह से मेल मिलाप होता था। लोग शादी तय करने की बातें भी किया करते थे। मेला दूर दराज के लोगों को एक जगह पर मिलाने का कारण भी होता था। हमें पंचमी के मेले का बड़ा इन्तजार रहता था।

इस समय हमारे खेतों में सरसों व जौ तैयार हो जाती थी। पीले–पीले खेत बड़े सुन्दर लगते थे। पंचमी में जौ और गोबर को देहलीज पर लगाया जाता था। बाद में इस जौ से बच्चों के पेट कीं मालिश की जाती थी। बंसन्त के मौसम में बच्चे रंग बिरंगी पंतग उड़ाया करते थे।

अब सब लोग अपनी जिन्दगी में व्यस्त हो गये हैं। पलायन के कारण गाँव में ज्यादा लोग बचे भी नहीं है। इन सब आयोजनों के न होने से महसूस होता है कि आपसी सम्बन्ध कमजोर होते जा रहे हैं। अब धीरे–धीरे पुरानी परम्पराएं समाप्त होती जा रही हैं।

पहला दशक

श्रमयोग के साथ मेरा सफर–15

अजय कुमार

24 नवम्बर 2019 को राजकीय इन्टर कॉलेज झीपा में आयोजित छठे महोत्सव को किन–किन मायनों में पहले आयोजित हो चुके पाँच महोत्सवों से अलग कहा जाय। यह बात जब मैं आज 2022 में सोचता हूँ तो मुझे कुछ बातें ध्यान आती हैं। सबसे पहले मैं यह कहूँ कि इस महोत्सव में एकत्र महिलाओं की संख्या पिछले सभी महोत्सवों से ज्यादा थी वो यह इस ओर भी ध्यान दिलाता है कि वर्ष 2013–14 में 12 गाँवों में काम करने से प्रारम्भ हुई यात्रा अब लगभग 80 गावों में हमारी उपस्थिति तक पहुँच चुकी थी। अब हम पहले से ज्यादा व्यवस्थित थे। हमारा कार्यक्षेत्र कलस्टरों में बट कर अच्छा काम कर रहा था। महिलाओं में अपने मंच के प्रति पहले से बहुत ज्यादा भरोसा था।

मंथन–2020 के दौरान रचनात्मक महिला मंच, सल्ट के सदस्य।

छठा महोत्सव इस मायने में भी अलग था कि पहली बार मंच द्वारा पंचायत चुनावों में प्रतिभाग करने वाली अपनी सदस्याओं को सम्मानित किया गया। कुछ 29 सदस्याएँ सम्मानित की गई। यह महोत्सव इस मायने में भी अलग था कि श्रमयोग समुदाय ने महोत्सव के लिये अब तक का सर्वाधिक 40,753 रूपये का आर्थिक सहयोग किया था। स्पेक्स तीसरे महोत्सव से ही महिलाओं के आवागमन के लिये बसों की व्यवस्था कर रहा था। वर्ष 2016 में तीसरे महोत्सव में महिलाओं के आवगमन के लिय दो बसों की व्यवस्था की गई थी। 2019 में छठे महोत्सव में मंच की सदस्याओं की बढ़ती संख्या के मद्देनजर इस बार बसों की संख्या बढ़ कर अब तक की सर्वाधिक 9 बसों तक पहुँच गई।

कुल मिलाकर यह एक यादगार आयोजन रहा। चॉच क्लस्टर के समूहों ने इसके आयोजन के लिये दिन रात एक किया। कुल मिलाकर यह शानदार रहा। चॉच गाँव के बी0 डी0 जोशी (जो अब दिल्ली में रहते हैं) महोत्सव में प्रतिभाग कर जब दिल्ली लौटे तब उन्होंने 'श्रमयोग पत्र' में लिखा – 'हमारे गाँव के निकट के गाँव में आयोजन हो रहा था, मैं सहमा हुआ था, कि हमारे इलाके के लोग भागीदारी करेंगे भी कि नहीं। लेकिन वहाँ मैंने भरोसे और आपसी विश्वास से लबरेज महिलाओं के हूजूम देखे और मैं दंग रह गया।' उनका यह कथन इस महोत्सव की ताकत को बयां करता है।

महोत्सव के तुरन्त बाद 28–29 नवम्बर को हमारी टीम ने चन्डीगढ़ में जैविक उत्पादों पर दो दिवसीय सेमिनार मे प्रतिभाग किया। वहाँ श्रम उत्पाद भी प्रदर्षन के लिये रखे गये। हमारे श्रम उत्पादों को वहाँ हाथों–हाथ लिया गया। पहले ही दिन हमारे सभी उत्पाद बिक गये। ऐसे आयोजन हमारे उत्साह को बढा रहे थे, और मंच की सदस्याओं को आर्थिक ताकत दे रहे थे।

वर्ष 2019 के दिसम्बर माह में चॉच–धारा विकास कार्यक्रम के भौतिक कार्य शुरू हुए। चॉच गाँव के ग्रामीणों की समिति श्री धर्म सेवा सोसायटी लम्बे समय से इसकी तैयारी कर रहा था। देहरादून की संस्था लोक विज्ञान संस्थान इसके लिए तकनीकि सहयोग उपलब्ध करवा रही थी और आर्थिक मदद कर रही थी बजाज कम्पनी की सी0एस0आर0 डिवीजन। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि चॉच गाँव के ग्रामीण 30 प्रतिशत कार्य श्रमदान से करने को तैयार थे। इस कार्य में ग्रामीणों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। बेहतरीन काम हुआ। जिन जल स्त्रोतों में जल की मात्रा व गुणवत्ता बढ़ाने के लिये काम हुआ। उसके आंकड़े अब भी निरन्तर एकत्र हो रहे हैं व ''श्रमयोग पत्र'' में छपते है।

वर्ष 2019 की तरह वर्ष 2020 की शुरुआत भी सल्ट व नैनीडांडा विकासखण्ड के 32 स्कूली बच्चों (बाल मंच के सदस्य) के दल के देहरादून में शैक्षिक भ्रमण के साथ हुई। यह कार्यक्रम स्पेक्स के सहयोग से आयोजित हुआ। श्रमयोग पत्र को निकलते हुए अब पाँच वर्ष पूरे हो रहे थे अत: फरवरी माह में पाँच वर्षो के महत्वपूर्ण आलेखों को संकलित करते हुए श्रमयोग पत्र का विशेषांक अंक निकाला गया। श्रमयोग पत्र का प्रसार बढ़ रहा था। प्रत्येक अंक के बाद हमें पाठकों की प्रतिक्रियाएं भी मिल रही थीं। हम उत्साहित थे, यात्रा आगे बढ़ रही थी।

वर्ष 2020 के फरवरी माह में हमने आठ दिवसीय मंथन शिविर का आयोजन किया। इस बार मंथन शिविर में पहली बार श्रम श्रखियों व रचनात्मक महिला मंच की व्यापक भागीदारी हुई। इस वर्ष मंथन की शुरूआत श्रम सखियों के साथ बैठक से हुई व समापन रचनात्मक महिला मंच की नैनीडांडा ईकाइ के साथ बैठक के साथ। हम अपनी कार्य योजना मंच के साथ बैठकर बनाने का अभ्यास कर रहे थे। जिसमें हम काफी हद तक सफल रहे। मंथन से निकले परिणामों को क्लस्टर स्तर पर समूहों की बैठकें आयोजित कर वहाँ रखने का निर्णय लिया गया। 26 से 31 मार्च तक इन बैठकों के आयोजन की योजना बनी। तभी कोविड की आहट होने लगी। इससे पहले कि हम क्लस्टर स्तर पर समूहों की बैठकें करते, पाबन्दियाँ शुरू हुई, लॉक डाउन हुआ, और सब कुछ थम गया।

क्रमश:

ढाई आखर.....

चुनाव और चुनाव का चुनाव

बिजू नेगी

देश में चार अन्य राज्यों के साथ, उत्तराखण्ड में विधानसभा और राज्य सरकार बनाने के लिए चुनाव अब दरवाजे पर हैं। चुनाव का मतलब है कि कुछ लोग हैं जो राज्य की विधानसभा में जाना चाह रहे हैं और जो फिर वहां जाकर, राज्य में सरकार बनाएंगे।

ऐसे समय में आपके मन में क्या चल रहा है? हम चुनावों को किस तरह देखते हैं? क्या चुनाव किसी खेल का महाकुंभ है जो हर पांच साल में एक बार होता है? क्या चुनाव कोई दंगल, कोई युद्ध है? क्या वह किसी खजाने को या तिजोरी की चाबी को ढूंढने–पाने की होड़ प्रतियोगिता है? क्या हम चुनाव को लेकर उत्साहित हैं कि यह कोई उत्सव हैं? या हम निराश हैं कि हमारे एक वोट से क्या फर्क पड़ने वाला है?

या क्या हम, जनता, इस चुनाव को एक चुनौती, एक जिम्मेदारी की तरह देखते हैं? हम चुनाव में अपनी दोहरी भूमिका – एक कर्ता व निर्णायक की – को कैसे देखते व समझते हैं?

क्या हमे पता है कि हमारे देश में व्यस्क मतदान का अधिकार दुनिया में अद्वितीय है? देश की आजादी के साथ हमें अपना संविधान बनाने का अवसर मिला। और आजादी के लगभग ढाई साल बाद, उस संविधान के बल पर हमने अपने को एक गणतंत्र घोषित किया। उस संविधान का प्रस्तावना ही पूरी तरह स्पष्ट कर देती है कि देश की संप्रभुता के मूल स्त्रोत हम, भारत के लोग, यानि देश का प्रत्येक नागरिक है। संविधान यह भी स्पष्ट करता है कि हमारा देश संप्रभु प्रजातांत्रिक गणतंत्र है – अर्थात् यह संविधान प्रजातंत्र के सिद्धांतों व लोक इच्छा शक्ति पर टिका है। इस संविधान की सबसे बड़ी खूबी है, उसमें निहित व्यस्क मतदान का अधिकार जो कि प्रत्येक व्यस्क नागरिक को हासिल है – बगैर किसी वर्ण, जाति, लिंग, शिक्षा, धन, पद, आदि के विभेद के। संविधान निर्माताओं द्वारा यह ''एक व्यक्ति, एक वोट'' अधिकार दर्ज करना हमारे जैसे देश में वास्तव में एक साहसिक व दूरदृष्टि वाला कदम था। जहां बहुत बड़ी जनसंख्या गरीब, भूमिहीन व निरक्षर थी और आज भी है। हमारे देश में व्यस्क मतदान का अधिकार अद्भुद है। क्यों ऐसा बड़े–बड़े देशों में भी नहीं हुआ था। क्या हमें मालूम है कि संयुक्त राज्य अमरीका में, जिसे हम दुनिया में सबसे विकसित देश मानते हैं, वहां नागरिकों को हमारे जैसा सार्वजनिक व्यस्क मतदान का अधिकार 1965 में जाकर मिला। 1946 तक तो वहां सिर्फ पुरुषों को ही मतदान का अधिकार था। हमारा संविधान और हमारा मतदान का अधिकार दुनिया भर के लिए एक अद्वितीय दूरदर्शिता व साहस की मिसाल बना।

और हम यह न भूलें कि हमारे देश में वह अद्भुद निर्णय ऐसे समय में लिया गया जब देश 200 सालों की गुलामी के बाहर निकला ही था और अपने विभाजन की एक भयंकर खूनी त्रासदी से गुजर रहा था। तिसपर, देश में 500 से अधिक ऐसी राजशाहियां थी जो सैकड़ों–हजारों सालों से हमारे यहां थीं और उस समय तक भी आजाद भारत का हिस्सा नहीं थीं। ऐसे में दृढ़ संकल्प के साथ और प्रत्येक नागरिक के विवेक पर भरोसा कर, हमने औपनिवेशिकता का जुआ अपने कंधों से छिटक दिया था।

हमें समझना और व्यक्तिगत व सामाजिक स्तर पर स्वीकार करना होगा कि मतदान का अधिकार हमारी बहुमूल्य विरासत तो है ही पर साथ ही, एक गंभीर जिम्मेदारी भी।

ऐसे में, हमारा चुनावों को एक क्षणिक खेल, एक लघु नौटंकी की तरह हल्के में लेना, हमारा खुद के प्रति गैर–ईमानदार व गैर–जिम्मेदार होना है। अगर हम मानते हैं कि हमारा नागरिक जीवन कष्टमय होता जा रहा है और गंभीर चुनौतियां मुंह बांये खड़ी रहती हैं तो हम यह भी मानें कि उनसे पार पाने की कुंजी हमारे हाथ में है। क्या हम समझ पा रहे हैं कि अगर हमारे नागरिक व सामाजिक जीवन में विषमताएं हैं, तो उसके जिम्मेदार हम खुद ही हैं?

अगर हम चुनावों को हल्के में लेते हैं, तो क्या यह खुद अपने जीवन से खिलवाड़ नहीं है? क्या यह अपने जीवन से धोखा नही?

अब जब अगला चुनाव दरवाजे पर है तो हमें क्या करना चाहिए? हम अपनी जिम्मेदारी से कन्नी न काटें। क्योंकि यह एक दिन नही, एक हफ्ता नही, एक महीना नही, पूरे पांच साल का सवाल है। यह हमारे बच्चों के भविष्य का सवाल है। हम ठीक से समझ लें कि जिनका हम चुनाव करने जा रहे हैं, वे हमारे सेवक हैं। उनके हाथों अपनी जीवन को गिरवी न रखें।

क्या हमको याद है कि पिछली बार जब चुनाव में प्रत्याशी व राजनीतिक दल हमसे वोट मांगने आये थे, तो हमसे उन्होंने क्या वायदे किये थे? क्या हम उन्हें पिछले वायदों की याद दिला सकते हैं? हम सवाल करना सीखें, हम चुनाव से पहले और चुनाव के बाद, उनसे हिसाब मांगना शुरू करें। आपकी शिकायतें भी होंगी। उनको लेकर भी सवाल करें। वोट डालने से पहले खूब सोचें कि इतने साहस से पाया गया अधिकार, इसकी दुर्दशा हमने क्यों और कैसे कर दी है।

गायब होती लकीरें

विक्रम

यूं तो सरकार ने हमारे लिए आधार कार्ड बनवाया है जिसमें सभी को अंगूठा लगाना पड़ रहा है। अब यह कितना अच्छा है, कितना खराब, यह तो मैं नहीं कहूँगा परन्तु इससे जुड़ी एक घटना जरूर आपके साथ साझा करूँगा। मैं अपने दोस्त के सीएससी सेन्टर में बैठा था। सीएससी सेन्टर एक मिनी बैंक भी होता है। यह सेन्टर एक गाँव की बाजार में है जहाँ पर सभी ग्रामीण आते है और आधार कार्ड के माध्यम से अंगूठा लगाकर अपना पैसा निकालते हैं। यहाँ रोजाना 30 से 40 ग्रामीण प्रत्येक दिन आते ही होगें।

उस दिन भी एक अम्मा आईं। उनकी उम्र 65 से 70 साल की रही होगी। उन्हें मैं जानता था। वह अपनी पेन्शन के 1000 रूपये निकालने आई थीं।

आमा सेन्टर वाले से– पैसा निकालना है नाती।

सेन्टर वाला– हाँ आमा अभी निकालता हूँ। आधार कार्ड लाई हो ?

आमा– हाँ नाती ।

सेन्टर वाला – लाओ आधार कार्ड दो आमा। (कुछ कम्प्यूटर में करने के बाद)

सेन्टर वाला – एक डिवाइस सामने रखकर। आमा इसमें अगूठा लगाओ।

आमा – अंगूठा लगाती हैं।

सेन्टर वाला– नहीं आया आमा एक बार फिर लगाओ।

आमा – जोर से अंगूठा लगाती हैं।

सेन्टर वाला – नहीं आया आमा। ऐसा करो अंगूठा थोड़ा दीवार में घिस लो।

आमा अंगूठे को दीवार में घिसती हैं। फिर लगाती हैं।

सेन्टर वाला – आमा नहीं आ रहा है ऐसा करो कोई और उँगली लगाओ।

आमा दूसरी उँगली लगाती हैं। यह सब देखकर मैं आमा के पास गया और पूछा–

मैं – आमा क्या हुआ?

आमा– नाती पैसे निकालने आयी हूँ और यह उँगली ही नहीं लग रही।

पैसे की जरूरत और न निकल पाने की चिन्ता उनके चेहरे पर पसरी हुई थी।

मैं – आमा हाथ दिखाओ। मैंने उनके हाथ देखे तो सारी उँगलियाँ घर के कामों और गाय भैसों के लिए चारा काटने मे जख्मी हुई थीं। कुछ निशान पुराने थे, कुछ अभी–अभी कुछ ही दिन के रहे होंगे।

मैं – आमा यह तो सब उँगलियाँ कटी हुई हैं और उँगलियों की लकीरें भी मिट गयी हैं।

आमा – नाती काम करते–करते सब मिट गई होंगी, और उँगलियाँ तो दराँती से कटती ही रहती हैं।

मैने उनकी सारी उँगलिया बड़े गौर से देखी तो सबसे छोटी उँगली में लकीरें दिख रही थीं।

मैं – आमा ऐसा करो इसे लगाओ देखते हैं। क्या पता लग जाए।

आमा – अच्छा! भगवान करे लग जाए।

सेन्टर वाला – लगाओ आमा।

सेन्टर वाला– आमा लग गया।

यह बात सुनते ही आमा के चेहरे पर खुशी की लहर दौड पड़ी और आमा के मुँह से पहला वाक्य निकला 'अब में इस उगली को बांध कर रखुंगी। इसकी लकीरें मिटने नहीं दूंगी।'

आमा – मेरे नाती ने मेरे हाथ की लकीरें ढूँड दी। और हँसते हुए पैसे लेकर चली गयी।

और मैं यह सोचता रह गया क्या होगा जब यह लकीरें भी मिट जाऐंगी !!!!

हिन्दी साहित्य जगत में हरिशंकर परसाई किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। उनकी व्यंग रचनाएं न सिर्फ गुदगुदाती हैं बल्कि व्यवस्था पर गहरी चोट करते हुए पाठक को सोचने के लिये मजबूर करती हैं। देश के पाँच राज्यों में आजकल जब चुनाव की प्रक्रिया चल रही है तब वर्षों पूर्व लिखी गई उनकी रचना 'हम बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं' आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है।

हम बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं

पाठकों, मैं वह हरिशंकर नहीं हूँ, जो व्यंग्य वगैरह लिखा करता था, मेरे नाम, काम, धाम सब बदल गए हैं। मैं राजनीति में शिफ्ट हो गया हूँ। बिहार में घूम रहा हूँ और मध्यावधि चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहा हूँ।

अब मेरा नाम है-बाबू हरिशंकर नारायण प्रसाद सिंह याद रखियेगा-नहिं ना भूलियेगा, हंसियेगा नहीं, हम नया आदमी है न अभी सुद्ध भासां सीख रहे है जैसा बनता है न, वैसा कोहते हैं। मैं बिहार की जनता की पुकार पर ही बिहार आया हूँ। जनता की पुकार राजनीतिज्ञों को कैसे सुनाई पड़ जाती है, वह एक रहस्य है धंधे का, नहीं बताऊँगा। जनता की पुकार कभी-कभी मेमने की पुकार जैसी होती है। वह पुकारता है माँ को और आ जाता है भेड़िया, मेमना चुप रहे तो भी कभी भेड़िया पहुँचकर कहता है तूने मुझे पुकारा था। मेमना कहता है मैंने तो मुंह ही नहीं खोला, भेड़िया कहता है तो मेने तेरे हृदय की पुकार सुनी होगी। बिहार की जनता कह सकती है हमने तुम्हें नहीं पुकारा, हमें तुम्हारे द्वारा अपना उद्धार नहीं करवाना, तुम क्यों हमारा भला करने पर उतारू हो ?

मैं कहूँगा मैंने दूर मध्य प्रदेश में तुम्हारे हृदय की पुकार सुन ली थी। वहाँ मध्यावधि चुनाव नहीं हो रहे है इसलिए वहाँ की जनता की सेवा नहीं कर सकता और बिना सेवा किए जीवित नहीं रह सकता। तुम राजी नहीं होओगे तो बलात सेवा कर लूंगा। सेवा का बलात्कार! समझे? अकेला मैं नहीं, भगवान श्रीकृष्णा भी बिहार की जनता का उद्धार करने आ पहुँचे हैं, बिहार की बाढ़, सूखा और महामारी सी पीड़ित जनता! अकाल से पीड़ित जनता! एक दिन मेरी कृष्ण भगवान से भेंट हो गई। मैंने पहचाना लिया, वही मोर मुकुट, पीतांबर और मुरली! मैंने कहा, 'भगवान कृष्ण हैं न,' वे बोले, हाँ वहीं हूँ पर मेरा नाम अब भगवान बाबू कृष्णनारायण प्रसाद सिंह हो गया है, कृष्ण बाबू भी कह सकते हैं।

मैंने कहा, भगवान क्या गोरक्षा आंदोलन का नेतृत्व करने पधारे हैं? चुनाव आ रहा है, तो गोरक्षा होगी ही। आप गोरक्षा आंदोलन के जरिए पॉलिटिस्क में घुस जाएंगे, कृष्ण ने कहा, नहीं उस हेतु नहीं आया। गोरक्षा आंदोलन आम चुनाव के काम का है, मध्यावधि छोटे चुनाव मे तो मूशक रक्षा आंदोलन से भी काम चल जाएगा। मूशक रक्षा में गणेश जी की रूचि हो सकती है, अपनी नहीं। मैंने कहा, तो फिर आपको रामसेवक यादव ने बुलाया होगा यादवों के वोट संसोपा को दिलवाने के लिए, कृष्ण खीज पड़े बोले मुझे भी तो बताने दो, मैं बिहार की जनता की पुकार पर आया हूँ। मैंने कहा, आपको भ्रम हो गया भगवान। वे तो कृष्णवल्लभ सहाय के समर्थक थे। जो उन्हें टिकट देने के लिए ऐसी जोर की आवाज लगा रहे थे कि दिल्ली में हाईकमान को सुनाई पड़ जाए। वे कृष्णवल्लभ बाबू का नाम ले रहे थे। आप समझे जनता आपको पुकार रही है। कृष्ण ने कहा, नहीं मैंने खुद सुना, जनता कह रही थी। हे भगवान अब तो तेरा ही सहारा है, तू ही उद्धार कर सकता है। इसी पुकार को सुनकर मैं यहाँ आ गया।

ऐसा हो सकता है। बात यह है कि चौथे चुनाव के बाद सिर्फ भगवान की सत्ता ही स्थिर है। बिहार के मुसीबतजदा लोग पटना में एक सरकार से अपनी कहते, तब तक दूसरी सरकार आ जाती है। उन्होंने ईश्वर की एक मात्र सरकार से गुहार की हो। मैंने कहा, ठीक किया जो आप आ गए। अब इरादा क्या करने का है ?

उन्होंने कहा, मेरा तो घोषित कार्यक्रम है, त्रिसूची साधुओं का परित्राण, दुष्कर्मियों का नाश और धर्म की संस्थापना।

मैने पूछा, कोई आर्थिक कार्यक्रम वगैरह ?

वे बोले, नहीं बस वही त्रिसूची कार्यक्रम है।

मैने पूछा यहाँ राजनीतिज्ञों में कोई साधु मिले ?

एक भी नहीं

और असाधु ?

एक भी नहीं, हर एक अपने को साधु और दूसरों को असाधु कहता है किसका नाश कर दूं समझ में नहीं आता ?

इसी वक्त मुझे ख्याल आया कि इनके हाथ में सुदर्शन चक्र तो है नहीं नाश कैसे करेंगे। मैंने पूछा तो कृष्ण ने बताया, चक्र घर में रखा है, क्योंकि उसका लाइसेंस नहीं है, फिर इधर अभी से धारा 144 लगी हुई है। मैने उन्हें समझाया, भगवान अगर सुदर्शन चक्र का लाइसेंस मिल जाए तो भी किसी को मारने पर दफा 302 में फंस जाएंगे। कृष्ण पसोपेश में थे। कहने लगे फिर धर्म की संस्थापना कैसे होगी ? मैंने कहा, धर्म की संस्थापना तो सांप्रदायिक दंगों से हो रही है। आप एक हड्डी का टुकड़ा मंदिर में डाल दीजिए और हिंदू धर्म के नाम पर दंगा करवा दीजिए। धर्म का उपयोग तो अब दंगा करने के लिए ही रह गया है। आप के विचार काफी पुराने पड़ गए हैं, हम लोग तो दुष्कर्मियों का परित्राण करने के लिए यह व्यवस्था चला रहे हैं। सबसे असुरक्षित तो साधु ही हैं।

भगवान कृष्ण को मैंने समझाया, आप संसदीय लोकतंत्र में घुसे बिना सब का उद्धार नहीं कर सकते। आप चुनाव लड़िए और इस राज्य के मुख्यमंत्री बन जाइए। रूक्मिणी जी को बुला लीजिए। जिस टूर्नामेन्ट का आप उद्घाटन करेंगे, उसमें वे पुरस्कार वितरण करेगीं। घर के ही एक जोड़ी कर कमलों से दोनों काम हो जाएंगे।

बड़ी मुश्किल से उनके सामंती संस्कारों के गले में लोकतंत्र उतरा। इससे ज्यादा आसानी से तो दरभंगा नरेश बाबू कामाख्या नारायण सिंह लोकतंत्री हो गए थे। कृष्ण को चुनाव के मैदान में उतारने में मेरा स्वार्थ था। राजनीति में नया-नया आया हूँ। पहले किसी बड़ी हस्ती का चमचा बनना जरूरी है। दादा को चमचा चाहिए और चमचे को दादा। दादा मुख्यमंत्री, तो चमचा गृहमंत्री मैंने सोचा, लोग शंकराचार्य को अपनी तरफ ले रहे है। मैं साक्षात भगवान कृष्ण के साथ हो जाऊं।

हम लोगों ने तय किया कि पहले अपने पक्ष में जनमत बनाएं और फिर राजनीतिक पार्टियों से तालमेल बिठाए। हम लोगों से मिलने निकल पड़े। मैं तो चमचा था। भगवान का परिचय देकर चुप हो जाता। जिन्होंने बहस कर करके अर्जुन को अनचाहे लड़वा दिया था, वे तर्क से लोगों को ठीक कर देंगे। ऐसा मुझे विष्वास था। पर धीरे-धीरे मेरी चिंता बढ़ने लगी। कृष्ण की बात जम नहीं रही थी। कुछ राजनीति करने वालों से बाते हुई। कृष्ण ने बाताया कि चुनाव लड़ रहा हूँ। वे बोले हां, आप क्यों न लड़ियेगा। आप भगवान है। आपका नाम है, आपका भजन होता है, आपका आरती होता है, आपका कथा होता है, आपका फोटू बिकता है, आप नहीं लड़िएगा तो कौन लड़ेगा, आप यादव हैं न ?

कृष्ण ने कहा, मैं ईश्वर हूँ। मेरी कोई जाति नहीं है।

उन्होंने कहा देखिए न, इधर भगवान होने से तो काम नहीं न चलेगा। आपको कोई वोट नहीं देगा। जात नहीं रखिएगा तो कैसे जीतिएगा ? जाति के इस चक्कर से हम परेशान हो उठे। भूमिहार, कायस्थ, क्षत्रिय, यादव होने के बाद ही कोई कांग्रेसी, जनसंघी, समाजवादी या साम्यवादी हो सकता है। कृष्ण को पहले यादव होना पड़ेगा, फिर चाहे वे मार्क्सवादी हो जाए। कृष्ण इस जातिवाद से तंग आ गए। कहने लगे, ये सब पिछड़े लोग हैं। चलो विश्विद्यालय चले। हमें प्रबुद्ध लोगों का समर्थन लेकर इस जातिवाद की जड़े काट देनी चाहिए।

विश्वविद्यालय में राजनीति के प्रोफेसर से हम बातें कर रहे थे। उन्होंने साफ कह दिया। मै कायस्थ होने के नाते कायस्थों का ही समर्थन करूंगा। कृष्ण ने कहा, आप विद्वान होकर भी इतने संकीर्ण है ? प्रोफसर ने समझाया, देखिए न, विद्या से मनुष्य अपने सच्चे रूप को पहचानता है। हमने विद्या प्राप्त की, तो हम पहचान गए कि हम कायस्थ हैं। कृष्ण घबड़ाकर एक पेड़ की छांह में लेट गए, कहने लगे, सोचते हैं लौट जाए। जहाँ भगवान को भगवान होने के कारण एक भी वोट न मिले, वहाँ अपने राजनीति नहीं बनेगी।

उधर, कृष्ण के राजनीति में उतरने की बात खूब फैल गई थी और राजनीतिक दल सतर्क हो गए थे। जनसंघ का ख्याल था कि गोपाल होने के कारण बहुत करके कृष्ण अपना साथ देंगे, पर अगर विरोध हुआ तो उसकी तैयारी कर लेनी चाहिए, उन्होने कथावाचकों को बैठा दिया था कि पोथियाँ देखकर कृष्ण की पोल खोजो, गड़बड़ करेंगे तो चरित्र हनन कर देंगे। चरित्र हनन शुरू हो गया था। कानाफूसी चलने लगी थी। कृष्ण शीतल छांह में सो गए थे। मैं बैठा था। तभी एक आदमी आया। मेरे कान में बोला- यह भगवान श्री कृष्ण हैं न ? मैंने कहा, हाँ, देखो क्या रूप है। उसने कहा एक बात बताऊं, किसी से कहिएगा नहीं, इनकी डब्ल्यू का मामला बड़ा गड़बड़ है। भगाई हुई है। रूक्मिणी नाम है। बड़ा दंगा हुआ था, जब उन्होंने रूक्मिणी को भगाया था। सबूत मिल गए है। पोथी में सब लिखा हुआ है। जो किसी की लड़की को भगा लाया, वह अगर शासन में आ गया तो हमारी बहु-बेटियों की इज्जत का क्या होगा ?

कृष्ण उठे, तो मैंने कहा, प्रभु आपका करेक्टर एसेसिनेशन शुरू हो गया, अब या तो आप चुनाव में हिम्मत से कूदिए, या मुझे छोड़िये, मैं कहीं अपना तालमेल बिठा लूंगा। आपके साथ रहने से मेरा भी राजनीतिक भविष्य खतरे में पड़ जाएगा। कृष्ण का दिमाग सो लेने के बाद खुल गया था। वे बड़े विश्वास से बोले, एक बात अभी सूझी है। यहाँ मेरे कई हजार पक्के समर्थक हैं, जिन्हें मैं भूल ही गया था। मेरे हजारों मंदिर हैं, उनके पुजारी तो मेरे पक्के समर्थक हैं ही। मैं उन हजारों पुजारियों के दम पर सारी सीटें जीत सकता हूँ। चलो, पुजारियों से बात कर लें।

हम एक मंदिर में पहुँचे, पुजारी ने कृष्ण को देखा तो खुशी से पागल हो गया। नाचने लगा, बोला धन्यभाग! जीवन भर की पूंजी मिल गई भगवान को साक्षात देख रहा हूँ। कृष्ण ने पुजारी को बताया कि वे चुनाव लड़ने वाले हैं। वोट दिलाने की जिम्मेदारी पुजारी की होगी। पुजारी ने कहा, आप प्रभु हैं वोट की आपको कौनो कमी है। कृष्ण ने कहा, फिर भी पक्की तो करनी पड़ेगी, तुम तो वोट मुझे ही दोगे न? पुजारी ने हाथ मलते हुए कहा- आप मेरे आराध्य हैं प्रभु, पर वोट का ऐसा है कि वह जात वाले को ही जाएगा। जात से कोई खड़ा न होता तो हम जरूर आपको ही वोट देते, कृष्ण की इतनी दीन हालत तब भी नहीं हुई होगी जब शिकारी का तीर उन्हें लगा था। कहने लगे, अब सिवा भूदान आंदोलन में शामिल होने के कोई रास्ता नहीं है। जिसका अपना पुजारी धोखा दे जाए। ऐसे पिटे हुए राजनीतिज्ञ के लिए या तो भारत सेवक समाज है या सर्वोदय, चलो बाबा के पास।

मैंने कहा, अभी वह स्टेज नहीं आई, अभी तो हम एक भी चुनाव नहीं हारे, पाँच-पाँच बार चुनाव हारकर भी लोग सर्वोदय में नहीं गए। चलिए, राजनीतिक दलों से बातचीत करें।

पहले हम कांग्रेस के दफ्तर गए, वहाँ बताया गया कि यहाँ काग्रेस है ही नहीं, मंत्री ने कहा, इधर तो कृष्णवल्लभ बाबू है, महेश बाबू है, रामखिलावन बाबू हैं, मिसरा बाबू है, कांग्रेस तो कोई नहीं है, और फिर कांग्रेस से मिलकर क्या करियेगा। जो गुट सरकार में चला जाता है, वह कांग्रेस रह जाता है। जो सत्ता में नहीं रहता। वह कांग्रेस का भी नहीं रहता। कांग्रेस कौन है, यह चुनाव के बाद ही मालूम होगा। कांग्रेस अब सरकार नहीं बनाती, सरकार गिराती है। आप चुनाव लड़िए, अगर आके साथ चार-पाँच विधायक भी हों तो हमारे पास आइए। आपकी मेजोरिटी बनाकर आपकी सरकार बनवा देंगे। हमने मंडल की सरकार बनवाई थी न।

हम संसोपा के पास गए। उन लोगों ने पहले परीक्षा ली। जब हमने कहा कि जवाहरलाल जो गुलाब का फूल शेरवानी में लगाते थे, वह कागज का होता था, तो वे लोग बहुत खुश हुए कहने लगे। बड़े क्रांतिकारी विचार हैं आपके। देखो यह नेहरू देश को कितना बड़ा धोखा देता रहा, मैने कहा, हम लोग समाजवादी होना चाहते हैं। वे बोले, समाजवादी होना उतना भी जरूरी नहीं है जितना गैर कांग्रेसी होना। डाकू भी अगर कांग्रेस विरोधी है तो बड़े से बड़े समाजवादी से श्रेष्ठ हैं-कृष्ण ने कहा लेकिन कोई आइडियोलॉजी तो होनी चाहिये। संसोपाई बोले, गैर कांग्रेसवाद एक आइडियोलॉजी ही तो है, इन आइडियोलॉजी के कारण सबसे तालमेल बैठ जाता है। गोरक्षा में जनसंघ के साथ, पूंजी की रक्षा में स्वतंत्र पार्टी के साथ, जनतांत्रिक समाजवाद में प्रसोपा के साथ, जनक्रान्ति में कम्युनिस्टों के साथ।

मैंने पूछा, डॉक्टर लोहिया ने कहा था कि जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिए गैर कांग्रेसी सरकार छह महीने के भीतर कोई चमत्कारी काम करके बताए। ऐसा हुआ था क्या? उन्होंने कहा, हाँ एक नहीं कितने चमत्कारी काम हो गए। हमारे मंडल बाबू ने ही कितना बड़ा चमत्मारी काम किया।

हम दोनों साम्यावादी दलों के पास गए। दक्षिणपंथी साम्यवादी दल ने कहा, तो कॉमरेड कृष्ण आपका हिस्ट्री हमने पढ़ा है। आप में वामपंथी दुस्साहसिकता और वामपंथी भटकाव दोनों है। आप मार्क्सवादियों के पास जाइए। मार्क्सवादियों ने कह दिया। तुम तो संशोधनवादी हो तुम्हारा सारा वर्गचरित्र प्रतिक्रियावादी है।

जनसंघ ने खुले दिल से स्वागत किया। कहा आप तो द्वापर से हमारी पार्टी के सदस्य थे। आइए आपका बौद्धिक हो जाए, उन्होंने कागज की एक पर्ची पर लिखा हिंदू राष्ट्र, गोरक्षा, भारतीय संस्कृति, पर्ची को एक छपे हुए कागज में रखा, फिर अलमारी से ताला चाबी निकाले, वे एक औजार से कृष्ण का सिर खोलने लगे। कृष्ण चौंककर हट गए। बोले यह क्या कर रहे हो ? उन्होंने समझाया, आपका बौद्धिक संस्कार कर रहे हैं, सिर खोलकर ये विचार दिमाग मे रखकर ताला लगा देंगे और चाबी नागपुर गुरूजी के पास भेज देंगे। न चाबी आएगी, न दिमाग खुलेगा, न परकीय ओर अराष्ट्रीय विचार आपके दिमाग में घुसेंगे।

शेष पृष्ठ-5 पर

जागो मतदाता तुम जागो

जगमोहन सिंह राणा, गोरशाली, भटवाड़ी

जागो मतदाता तुम जागो, देश जगेगा सारा।
कर्मठ व्यक्ति को आगे लाओ, यही हो लक्ष्य हमारा।
दिन-दो दिन का मुद मंगल छोड़ो, पाँच बरस है लम्बा।
भला-बुरा तो पशु पहिचाने, अच्छा कौन निकम्मा।
जागो मतदाता तुम जागो, तुम हो भाग्यविधाता।
मत का पुण्य करो निस्वार्थ, त्यागकर रिश्ता, नाता।
भाभी, भैया, दिवर, जिठानी, चाचा, मामा, नाना।
त्यागेंगे ये स्वार्थ न जब तक, गाँव रहेगा काना।
जागो मतदाता तुम जागो, जगकर ही जागृति आती।
दीन, दुर्बल, दलित न रहेंगे, नाच उठेगी हर थाती।
सीप के मुंह में स्वाति डालो, तभी बनेंगे मोती।
जागोगे मतदाता यदि तुम कितनी खुशियाँ होंगी।

प्राकृतिक चिकित्सा

मिनरल, विटामिन्स से भरपूर व स्वास्थ्य वर्धक रसाहार

जीवन विद्या प्रतिष्ठान, बिजनौर

प्रथम योजना

नीचे वर्णन किये गये सभी रस शरीर में उपस्थित गंदगी को शरीर से बाहर निकालने में उपयोगी हैं। इनका सेवन सुबह करना बहुत उपकारी है। इनका सेवन सुबह काढ़े के बाद करें। जब थोड़ी भूख लगे तो अपनी अनुकूलता, रूचि, उपलब्धता एंव मौसम के अनुसार कोई एक या दो रस लें। एक रस लेने के बाद जब थोड़ी भूख लगे तब लगभग 1 घण्टे बाद दूसरा रस लें।

1. नींबू का रस- 200 से 300 मिली ताजा गुनगुना या गर्म पानी लें। उसमें आधा से एक नींबू का रस एवं थोड़ी मिश्री/खांड/चीनी या एक चम्मच शहद अपनी प्रकृति अनुसार मिलाकर पिएं। इस रस को बिना मीठे के भी ले सकते हैं।

2. आंवला रस- 200 से 300 मिली ताजा गुनगुना या गर्म पानी लें। उसमें 15-20 मिली आंवला रस व 3-5 मिली अदरक रस में एक चम्मच शहद या खांड-चीनी मिला कर प्रयोग करें। जिस समय आंवला रस उपलब्ध न हो तो आधा से एक चम्मच आंवला चूर्ण में 3-5 मिली अदरक रस व एक चम्मच शहद या खांड-चीनी मिला कर प्रयोग करें। इस रस को बिना मीठे के भी ले सकते हैं। ये कफ रोगों में भी प्रभावशाली है। साथ ही पौष्टिक है और अम्ल-पित्त (एसीडिटी) को भी कम करता है।

3. सफेद पेठा- सफेद पेठा (जिसकी मिठाई बनती है) का 150 मिली रस 50 मिली पानी में मिलाकर प्रयोग करें। पेठा अच्छी तरह से परिपक्व हो। कई बार छोटे पेठे कच्चे होते हैं जिनमें गुण कम होते हैं। हमारे यहाँ पेठे के रस का सबसे ज्यादा प्रयोग होता है। इसमें सर्वोत्तम क्षारीयता होती है। इसलिए एसीडिटी (अम्ल-पित्त), एसिड रिफ्लेक्स में ये सर्वोत्तम है। यह मूत्र संक्रमण की भी अच्छी औषधि है। पेठे का रस सब जगह गुणकारी है। पेठा स्नायुतंत्र (नर्वस सिस्टम) को सबल बनाता है। पेठा रस स्नायु शक्ति वर्धक है एंव दिमागी टॉनिक भी है। सफेद पेठे का कुष्माण्ड पाक एंव कुष्माण्ड अवलेह भी बनता है। ये दोनों पौष्टिक होने के साथ-साथ शरीर की अतिरिक्त गर्मी को कम करते हैं। पेठे का रस ठंडा होता है। इसलिए सर्दियो मे इसका सेवन सुबह 10 से दोपहर 12 बजे के बीच करना चाहिए। अधिक मात्रा में लेने से जोड़ों का दर्द बढ़ सकता है।

4. नारियल पानी (डाब)- 150-200 मिली नारियल पानी एसिडिटी (अम्ल-पित्त) एसिड रिफ्लेक्स में प्रभावशाली है। यह भी ठंडा होता है। अत: सर्दियों मे इसे भी सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे के बीच ही लेना चाहिए। कई रोगों में विशेषकर गुर्दे के रोगों में नारियल पानी नहीं देते है। किसी-किसी को नारियल पानी एसिडिटी करता है। कई बार नारियल पानी कड़वा व सड़नयुक्त होता है। इसलिए सावधानीपूवर्क प्रयोग करें।

5. दूब घास-गेहूं-जौ-जई घास का रस- 30-40 ग्राम ताजी साफ दूब घास मिले तो सर्वोत्तम या विकल्प के रूप में 40-50 ग्राम गेहूं-जौ-जई की मुलायम पत्तियों को सिल बट्टे पर अथवा मिक्सी में पीसकर 100 मिली पानी में मिलाकर छानकर प्रयोग करें। गेंहू-जौ-जई के उगने के 7-8 दिन से लेकर 10-12 दिन के पौधे ज्यादा गुणकारी होते हैं। सामान्यतया यह रस सभी के लिए हितकारी है। शुगर, कैंसर एंव थायराइड के मरीजों के लिये विशेष लाभकारी होता है। यह रस रक्तवधर्क व रक्त शोधक है एंव हीमोग्लोबिन को बढ़ाता है।

नोट: उपरोक्त रसों में निम्न को अपनी आवश्यकता अनुसार मिलायें-

1. जिनको शरीर में दर्द हो अथवा कफ हो वह थोड़ा अदरक का रस मिलायें।

2. जिनकों उच्च रक्तचाप, हृदय रोग हो वह 2-3 कली पोथी लहसुन का रस मिलायें।

3. जिनको शरीर में दर्द भी हो और उच्च रक्त चाप एंव हदय रोग भी हो तो अदरक एंव लहसुन दोनों का रस मिलाएं।

4. ये रस खाली पेट ज्यादा प्रभावशाली हैं। इन्हें भूख होने पर ही लेना चाहिए। बिना भूख के खाना, पीना शरीर को रोगी बनाता है। उपरोक्त रसों में से अपनी आवश्यकतानुसार कोई 1 से 3 रस ले सकते हैं। एक रस लेने के बाद जब भूख लगे तब दूसरा रस लें। सामान्य तौर पर 40-50 मिनट में ये रस पच जाते हैं। पहले रस के सेवने के एक घंटे बाद जब भूख का अहसास हो तब दूसरा रस या भोजन लें।

द्वितीय योजना

रसों के साथ मोटापे को मात

प्रकृति हमें बहुत सारे फल और सब्जियां प्रदान करती है, जिनको यदि आप अपने आहार में सही तरीके से शामिल करते हैं तो आप निश्चित रूप से अतिरिक्त वजन से छुटकारा पाने में सफल होगें। इन साग सब्जियों में सूक्ष्म पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं और उनसे कैलोरी बहुत कम मात्रा में प्राप्त होती है। रस आहार के बारे मे सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें कोई वसा नही है। यह विटामिन, खनिज और अनजाईम से भी समृद्ध हैं। यह भूख को कम करने का कार्य करते हैं, और इस तरह आप को वजन कम करने मे मदद मिलती है। अतिरिक्त वजन घटाने मे आपकी मदद करने के साथ-साथ ये रस आपकी तव्चा को भी चमकाते हैं और उम्र बढ़ने की प्रकिया को धीमा कर देते है। सुनिश्चित करें कि आप प्रत्येक भोजन से 20-25 मिनट पहले रस का गिलास पियें क्योकि इससे आपकी भूख कम हो जायेगी और आपको वजन घटाने मे सहायता मिलेगी।

नीचे 9 श्रेष्ठ (हमारी राय में) रस आहार व्यंजनों को दिया जा रहा है जिन्हें आप स्वाभाविक रूप से वजन कम करने के लिए उपयोग कर सकते हैं।

1. ककड़ी- टमाटर रस

साम्रागी- 2-3 टमाटर, 200-250 ग्रा0 ककड़ी, 1 डंठल सेलरी, अजमोद/अजवायन, 1 ग्रा0 काली मिर्च, 500 मिग्रा दाल चीनी, रूचि अनुसार धनियां-पुदिना डाल सकते हैं। सभी साम्रागी को काटकर जूसर में डालकर रस तैयार करें। हल्के मीठे का मन है तो 3-4 बूंद स्टीविया अर्क/पाउडर या पत्तियां भी डाल सकते है। गर्मियों के महीने में यह रस बहुत बेहतर होता है।

2. चुकन्दर-अजवायन रस

साम्रागी- 4-5 डंठल सेलरी, 50 ग्राम चुकन्दर, 100 ग्रा0 कटा पालक, धनिया पत्ती, मामूली सा सेन्धा व काला नमक, एवं थोड़ा सा नींबू रस। सभी सामग्री को काट कर जूसर में डालकर रस तैयार करें। नमक व नींबू रस बाद में मिलायें। ये रस शरीर से टाक्सिन-कचरा निकालने में विशेष प्रभावशाली होता है।

3. पालक सेब रस

साम्रागी- 2-3 मध्यम आकार के सेब, 100 ग्रा0 कटा हुआ पालक, 25 ग्रा0 लाल लैटयूस या गाजर की पत्तियां, एक छोटा टुकड़ा दाल चीनी। सभी सामग्री को काट कर जसूर में डालकर रस तैयार करें। यह रस स्वास्थ्यवर्धक एंव स्वादिष्ट है।

4. पीली मिर्च-अंगूर रस

सामग्री- 3-4 गाजर, 1 पीली मिर्च, 100 ग्रा0 अंगूर, 1 कीवी, थोड़ा अदरक, 1 छोटी चुकन्दर। सभी सामग्री को काटकर जसूर में डालकर रस तैयार करें। हल्के मीठे का मन है तो 3-4 बूंद स्टीविया भी डाल सकते है। यह स्वादिष्ट एंव वजन घटाने को बेहतर रस है।

5. नींबू-तरबूज रस

सामग्री- 150-200 ग्रा0 बीज सहित तरबूज, 1 नींबू, थोड़ी पुदीना पत्तिया, तरबूज एंव पुदीना पत्तियों को ग्राईण्डर मिक्सर जार में डालकर रस बनायें। बाद में नींबू रस मिलाकर पीयें। स्वादिष्ट- पौष्टिक एंव वजन घटाने के लिये बेहतर रस।

6. अनार-अरदक रस

सामग्री- एक छोटा टुकड़ा अदरक, 1 माध्यम आकार का अनार, 3-4 आंवले,

अदरक को छीलकर बारीक काटे एंव अनार को छीलकर दाने निकाल लें। आंवले को काटकर गुठली निकालकर बारिक काटले फिर तीनों को ग्राईण्डर मिक्सर जार में डालकर रस बनायें।

7. लौकी, खीरा, गाजर, पत्तागोभी, टमाटर, सेलरी, ब्रोकली, लेटयूस, हरा धनिया, पुदीना, आंवला, नींबू आदि जो भी मौसम अनुसार मिले उसका 200-300 मिली रस।

8. गांजर-चुकंदर-हरा धनिया-पुदीना-आंवला-नींबू-टमाटर आदि जो भी मौसम अनुसार मिले उसका 200-300 मिली रस।

9. आंवला रस- 15-20 मिली आंवला रस व 3-5 मिली अदरक रस या आंवला रस 15-20 मिली, अनार रस 40-50 मिली व अदरक रस 3-5 मिली में एक चम्मच शहद मिलाकर प्रयोग करना स्वास्थ्य वर्धक है। जिस समय आंवला रस उपलब्ध न हो तो उस समय आधा चम्मच आंवला चूर्ण मिलायें। ये कफ रोगों में भी प्रभावशाली है। यह पौष्टिक है और अम्ल-पित्त, उल्टी आदि में भी प्रभावशाली है।

खाने पीने के सन्दर्भ में एक प्रस्ताव

खाने पीने से 10-15 मिनट पूर्व अपने मन व तन को विश्राम की स्थिति में लेकर आयें। भोजन ग्रहण करने के स्थान पर बैठकर यह मनन करें कि मेरे इस भोजन में किन-किन लोगों का योगदान है। उनका स्मरण करें उनके प्रति आभार व कृतज्ञता का अनुभव करें। फिर प्रसन्नता पूर्वक शान्त चित्त होकर अच्छी तरह चबा-चबा कर भोजन ग्रहण करें।

आयुर्वेद के अनुसार स्वस्थ जीवन का एक सूत्र है कि बिना भूख के भोजन न करें तथा भोजन हमेशा भूख से थोड़ी कम मात्रा में लेना चाहिए। सुबह के समय यदि भूख अच्छी है तो सुबह का जलपान व नाश्ता स्वास्थ के लिए हितकर है। सुबह यदि भूख न हो तो नाश्ता या भोजन नहीं करना चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार बिना भूख के सुबह कुछ भी खाना-पीना विष के समान घातक माना गया है।

पृष्ठ-4 का शेष.....

हम बिहार में चुनाव लड़ रहे हैं

कृष्ण आतंकित हो गए। वे एक झटके से उठे और बाहर भागे। पीछे से वह आदमी चिल्लाया, रूकिए, हमारे स्वयंसेवकों को एक-एक सुदर्शन चक्र तो देते जाइए। हम भागे तो सीधे शोषित दल वालों के पास पहुँचे। उन्होंने कहा, अभी से आप शोषित कैसे हो सकते है ? शोषित तब होता है जब विधायक हो जाए, पर आप मंत्री न हों, आप मंत्री नही बन सके तो शोषित होंगे। तब हमारे साथ हो जाइए। क्रांतिदल के महामाया बाबू से मिलने का भी इरादा था, पर सुना कि जब से उन्होंने कामाख्या बाबू के खिलाफदायर 2018 मुकदमें उठाए तब से उनकी खदान में ही गुप्त वास कर रहे हैं। खदान के बाहर ही राजा कामाख्या नारायण सिंह मिल गए। उन्होंने कहा, मेरे साथ होने से आप लोगों का राजनीति की दुनिया की पूरी सैर करनी पड़ेगी। आप थक जाएंगे। हम आदमी में मेरे जैसी फुर्ती नहीं है। देखिए न मैंने जनता पार्टी बनाई। फिर स्वतंत्र पार्टी में चला गया। फिर कांग्रेस में लौट आय। फिर भारतीय क्रांतिदल मे चला गया। फिर भारतीय क्रांतिदल से निकलकर जनता पार्टी बना ली। मेरे लिए राजनीतिक दल अंडरवियर हैं, ज्यादा दिन एक ही को नहीं पहनता, क्योंकि बदबू आने लगती है। अपने पास कुल सत्रह विधायक होते हैं पर कोई भी सरकार मेरे बिना चल नहीं सकती। आप लोग तो अपनी अलग पार्टी बनाइए। अपने कुछ लोगों का विधानसभा में ले आइए और फिर सिंहासन पर बैठकर कांग्रेसवाद, संघवाद, क्रांतिवाद, समाजवाद, साम्यवाद सबसे चरण दबवाइए। सिद्धान्त पर अड़ेंगे तो मिटेंगे। सबसे बड़ा सिद्धान्त सौदा है।

हमें भी बोध हुआ कि किसी दल से अपनी पटरी पूरी तरह बैठेगी नहीं। अपना अलग दल होना चाहिए। अगर अपने चार-पाँच विधायक भी रहे, तो जोड़-तोड़, उठापटक और उखाड़-पछाड़ के द्वारा प्रदेश की सरकार हमेषा अपने कब्जे में रहेगी। हमने एक नई पार्टी बना ली है, अभी यह पार्टी सिर्फ बिहार में कार्य करेगी। यदि मध्यवधि चुनाव में इसे जनता का समर्थन अच्छा मिला, तो अखिल भारतीय पार्टी बना देंगे। इस पार्टी का संक्षिप्त मेनिफेस्टो यहाँ दे रहे हैं।

भारतीय राजनीति में व्याप्त अवसरवाद, मूल्यहीनता और अस्थिरता को देखकर हर सच्चे जनसेवक का हृदय फटने लगता है। राजनीतिक भ्रष्टाचारी के कारण आज देश के करोड़ों मानव भूखे हैं, नंगे है, बेकार हैं। वे अकाल, बाढ़, सूखा ओर महामारी के शिकार हो रहे हैं। असंख्य कंठों से पुकार उठ रही है- भगवान आओ और नई राजनीतिक पार्टी बनाकर सत्ता पर कब्जा करो और हमारी रक्षा करो। जनता के आर्त्तनाद को सुनकर भगवान कृष्ण बिहार में अवतरित हो गए हैं और उन्होंने हरिशंकर नारायण प्रसाद सिंह नाम के विष्विख्यात जनसेवक के साथ मिलकर एक पार्टी की स्थापना कर ली है। पार्टी का नाम भारतीय जनमंगल कांग्रेस होगा।

नाम में जन या जनता या लोक रखने का आधुनिक राजनीति में फैषन पड़ गया है इसलिए हमने भी जन शब्द रख दिया है जनता से प्रार्थना है कि जन को गंभीरता से न ले, इसे वर्तमान राजनीति का एक मजाक समझे, पार्टी के नाम पर भारतीय इसलिए रखा है कि आगे जरूरत हो तो भारतीय जनसंघ के साथ मिलकर सत्ता में हिस्सा बंटा सकें। कांग्रेस इसलिए रखा है कि अगर इंदिरा जी वाली कांग्रेस को अल्पमत सरकार बनाने की जरूरत पड़े तो पहल हमें मौका दें। जनता शब्द की व्याख्या किसी दल ने नहीं की है। हम पहली बार ऐसा कर रहे हैं। जनता उन मनुष्यों को कहते हैं जो वोटर हैं और जिनके वोट से विधायक तथा मंत्री बनते हैं। इस पृथ्वी पर जनता की उपयोगिता कुल इतनी है कि उनके वोट से मंत्रिमंडल बनते हैं। अगर जनता के बिना सरकार बन सकती है, तो जनता की कोई जरूरत नहीं है। जनता कच्चा माल है, इससे पक्का माल विधायक, मंत्री आदि बनते हैं। पक्का माल बनने के लिए कच्चे माल को मिटना ही पड़ता है।

हम जनता को विश्वास दिलाते हैं कि उसे मिटाकर हम ऊंची क्वालिटी की सरकार बनाएंगे। हमारा न्यूनतम कार्यक्रम सरकार में रहना है। हम इस नीति को मानते है यथा राजा, तथा प्रजा। अगर राजा ठाठ से ऐशो आराम में रहेगा तो प्रजा भी वैसी ही रहेगी। राजा अगर सुखी होगा तो प्रजा भी सुखी होगी, इसलिए हमारी पार्टी के मंत्री ऐषो आराम से रहेंगे। जनता को समझना चाहिए कि हमें मजबूर होकर सुखी जीवन बिताना होगा, जिससे जनता भी सुखी हो सके, यथा राजा तथा प्रजा।

हमारे उम्मीद्वार विधायक होने के लिए चुनाव नहीं लड़ेंगे वे मंत्री बनने के लिए वोट मांगेगे। हमारी पार्टी के उम्मीद्वार को जब जनता वोट देगी, तो मंत्री को वोट देगी। हम अपनी पार्टी के हर विधायक को मंत्रिमंडल में लेंगे। जिससे कोई दल न छोड़े।

समाप्त।

खबरें कार्य क्षेत्र से

श्रमयोग संस्थान सोसायटी पंजीकरण एक्ट के तहत पंजीकृत एक जन संस्थान है। श्रमयोग के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य व देश के अलग-अलग हिस्सों में जन समुदायों के साथ मिलकर विकासात्मक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है। यहाँ श्रमयोग के कार्य क्षेत्र की खबरें दी जा रही है। बच्चे अपने क्षेत्र में बढ़लते तापमान पर नजर रख रहे हैं। यहां उनकी अभिव्यक्ति को स्थान दिया जा रहा है।

– सम्पादक

कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट

नैनीडांडा क्लस्टर

आसना

एक वर्ष का समय फिर से निकल चुका है। अब नया वर्ष 2022 प्रारम्भ हो गया है। बैठकों में सभी सदस्याओं को नए वर्ष की शुभकामनायें व अच्छे स्वास्थ की कामना की गई। मैं (आसना) अन्य व्यस्तताओं की वजह से काफी समय से नैनीडांडा कलस्टर की महिलाओं से मिल नहीं पाई थी। हमारी श्रम सखी ऊषा देवी बैठकें कर रहीं थीं। इस बार सभी सदस्याओं से मिल कर आई। मुझे अच्छा लगा यह देख कर की सभी बैठकों में सदस्याऐं अपना परिचय अच्छी तरह दे पा रहीं थीं। उपस्थिति अच्छी थी और ध्यानपूर्वक बातों को सुन रही थीं। सतखोलू गाँव की सदस्याओं को नए कार्य (सामूहिक पॉलीहाउस) की बधाई दी और उनके पॉली हाउस का भ्रमण किया। पॉलीहाउस के अन्दर सदस्याओं ने प्याज, खीरा, भिन्डी, मटर, मिर्च, टमाटर व बीन्स के बीज लगा रखे हैं। अभी पानी की व्यवस्था करना बाकी है। नया सवेरा स्वयं सहायता समूह की सदस्याओं को एक नई जिम्मेदारी दी गई, जिसमें सदस्याओं से कहा गय कि उनका समूह अब से 'समस्याओं के समाधान पेश करने वाला' समूह होगा। किसी भी समूह से व गाँव में आने वाले प्रक्षिशुओं के लिए इस वर्ष सारी व्यवस्थाऐं करने की जिम्मेदारी नया सवेरा स्वंय सहायता समूह की सदस्याओं की होगी।

रचनात्मक महिला मंच की नव निर्वाचित अध्यक्षा धनेश्वरी देवी ने भूतपूर्व अध्यक्षा ऊषा देवी के साथ बैठकर उनके अनुभवों को सुना। मंच ने धनेश्वरी देवी को जिम्मेदारी दी है कि वो फरवरी माह में श्रम सखी के साथ बैठकों में जाएं और देखें की बाकि समूहों मे किस तरह की गतिविधियाँ चल रही हैं।

चाँच-झीमार एंव रथखाल क्लस्टर

राकेश, दाड़िमी

इस बार चांच में अधिकतर बैठकें आयोजित की गयी। हांलाकि कई समूह की सदस्याओं ने बैठकों के लिए मना कर दिया था, क्योंकि वहां लोगों को बुखार और सर्दी की शिकायत थी। 17 जनवरी को देशवाल बाखली में बैठक आयोजित की गयी, जिसमें समूह की सदस्याओं का कहना था कि उन्हें गोबर खाद बनाने का प्रशिक्षण चाहिए। उनके गांव में अच्छी खेती होती है, और हिमोत्थान संस्था के साथ काम करके पानी की भी व्यवस्था है। साथ-साथ पशु प्रबंधन को लेकर काफी बातचीत की गयी। उन्होंने एक बात और कही की हमारे गांव में आंगनबाडी दूर होने से हम अपने बच्चों को वहां तक नहीं भेज पाते, जिसके कारण हमें अनेक सुविधाएं नहीं मिल पाती हैं। हमें यह समझ नहीं आ रहा कि इनके लिए हम करें क्या ?। 20 जनवरी को कफल्टा में बैठक आयोजित की गयी जिसमें महिलाओं ने पॉली हाउस के लिए बात की। उन्हें बताया गया कि इसके विषय में पूर्ण जानकारी लेकर हम आपको अगली बैठक में बताएंगे। साथ-साथ उन्होंने मडुएं के बीज की बात कही, जिसमे उन्हें बताया गया कि कृषि विभाग से बीज हर वर्ष मिलता है, जब आएगा तो हम आपको सूचित कर देंगे। चांच के समूह उड़ान स्वयं सहायता समूह का कहना था कि हमें अदरक का बीज चाहिए। पिछले वर्ष दाड़मी, झीपा, कुक्लयाल बाखली के समूहों द्वारा जो अदरक लगाया गया था उसका उत्पाद बहुत अच्छा रहा। विवेक समूह की पुष्पा देवी का कहना है कि 'पहले हमें अदरक खरीदना पड़ता था, किन्तु पिछले वर्ष समूह के माध्यम से जो बीज मैंने लिया वह बहुत अच्छा हुआ। मैंने 10 किलों बीज लिया था, और वह लगभग 50 किलो निकला है, मैं इस बार लगभग 25 किलो का बीज लगाऊगी। आगे उन्होंने कहा कि आज तक मैं श्रम उत्पाद में प्रतिभाग नहीं कर पायी हूँ, किंतु इस बार मैं हल्दी भी लगाऊगी।' समूह की सदस्या राधा देवी ने कहा – 'बीज बहुत अच्छा हुआ। मैंने 15 किलो बीज लगाया था और लगभग 75 से 80 किलो अदरक निकला है।' नैकड़ा के समूह ने अदरक के बीज और सब्जियों के बीजों की बात कही।

गिगंडे क्लस्टर

गुंजन

कोरोना महामारी ने पिछले दो वर्षो में अपना कहर बरपाया है और अभी भी इसका असर जारी है। कोरोना की पहली व दूसरी लहर ने आम जन-जीवन में दहशत मचाई। कई लोगो के रोजगार चले गये, स्कूल बंद हो गये, जनहानि हुई। लॉक डाउन होते ही लोग शहर से अपने-अपने गावों में आ गये। एकाकी परिवार फिर से संयुक्त परिवारो में परिवर्तित हो गये। परिवारो में लोगो की संख्या बढ़ गई। जिसका असर परिवारो के पोषण पर पड़ा।

कहा जाता है कि अगर नींव मजबूत हो तो इमारत लम्बी टिकती है। इसका सीधा सा अर्थ यह है कि जब बच्चो का सही शारीरिक व मानसिक विकास होगा तभी बच्चा स्वस्थ्य होगा। तभी उनका सर्वांगीण विकास होगा। जब हम बच्चो के सर्वांगीण विकास की बात करते हैं तो हम बच्चो के सही पोषण की भी बात करते हैं। बच्चो में पोषण व शारीरिक विकास को मापने के लिये गिगड़े क्लस्टर में सितम्बर 2019 माह में 0-18 वर्ष तक के 90 बच्चो के बी0एम0आई0 की जाँच की गई थी, जिसमें 0-5 वर्ष के कई बच्चों का बी0एम0आई0 औसत से कम था। इस माह गिंगड़े क्लस्टर में बच्चो में पोषण के लिए 0-5 वर्ष के 21 बच्चो को पोषाहार (दलिया व किशमिश) वितरित किया गया।

गाँवों में अब कोरोना के तीसरे वैरियन्ट के आने की खबर है। जिसे अभी ऑमीक्रोन नाम दिया गया है। कोरोना के इन नये-नये प्रकारों से देश की अर्थव्यवस्था तो हिल ही गई है, मंहगाई आसमान छू रही है, युवा बेरोजगार बैठे हैं। जो लोग रोजगार की तलाश में चले भी गये हैं अब फिर से उनके रोजगार पर संकट मंडरा रहा है। बच्चों की पढ़ाई नहीं हो पा रही है। इन सब चिंता के विषयों पर श्रम सखी देवकी देवी जी ने जनवरी माह की बैठकों में इन बातों को सदस्याओं के बीच रखा और सदस्याओं को जागरूक रहने, अपने स्वास्थ का ध्यान रखने, मॉस्क पहनने के लिए के लिए प्रेरित किया।

किचन गार्डन की मजबूती व उत्तम स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए जो बीज वितरित किया गया था उनकी प्रतिपुष्टि ली गई। सदस्याओं ने बताया कि धनिया, मूली, मैथी, राई तो खाने भी लगे हैं। सदस्यायें अब निरन्तर अपनी क्यारी-बाड़ी का ख्याल रख रही हैं । पिछले साल कोविड-19 के दौरान क्यारी-बाड़ी से सदस्याओं को बड़ी राहत मिली थी। सदस्याओं ने अपनी क्यारी से बहुत सी सब्जियाँ खाई थी और गाँव के जरूरत मंद लोगों को भी बांटी थी। अभी भी ये प्रक्रिया सुचारू रूप से चल रही है। संगम स्वयं सहायता समूह ग्राम डयौना की सदस्याओ ने श्रम-उत्पाद में प्रतिभाग किया था। उन सभी सदस्याओ का रू0 9000 का भुगतान किया गया।

घचकोट क्लस्टर

विजय

दिसम्बर माह की बैठको में घचकोट क्लस्टर के स्वयं सहायता समूह में तय तिथियों पर सुचारू रूप से बैठकों का आयोजन किया गया व निम्न विषयों पर चर्चाएं कि गई-

सकरखोला में गठित परम्परा, व देवभूमि स्वयं सहायता समूहों की बैठकों में कोविड के नियम के साथ व वर्तमान में कोविड की स्थिति के बारे में चर्चा की गई। राज्य में बच्चों को कुपोषण से मुक्ति दिलाने के लिए सरकार के सभी प्रयास बेमानी साबित हुए हैं। पिछले साल की तुलना में इस साल अति कुपोषित बच्चों की संख्या 22 हजार और बढ़ गई है। इन आंकड़ो से साबित हो रहा है कि सरकार के पोषण पर बच्चों का कुपोषण भारी है। जनवरी माह में बच्चों को कुपोषण से मुक्ति दिलाने के लिए अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन के सहयोग से 71 स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के 0 से 5 साल तक के बच्चों को किशमिश व दलिया वितरित किया गया।

इसके लिये श्रमयोग संस्था द्वारा पहले सभी समूह के सदस्याओं के शून्य से पांच साल तक के बच्चों का वजन व लम्बाई नापी गई। जिसमें सदस्याओं को बताया गया कि कितने साल के बच्चे के लिए कितना वजन होने पर बच्चा सामान्य होगा। कितना वजन होन पर कुपोषित तथा कितने पर अति कुपोषित होगा। यह वजन 4 महिने तक समूह की बैठकों में नापा गया, जिसमें लगभग 80 प्रतिशत बच्चे कुपोषित पाऐ गये। साथ ही कुपोषण को दूर करने के लिए गर्भवती महिलाओं को गरम व ताजा बना भोजन, दूध-दही, सब्जियाँ, मौसमी फल व घी आदि खाने में उपयोग करने को कहा गया।

मैठानी में गठित सरस्वती स्वयं सहायता समूह की सदस्याओं ने कृषि व कृषि से इतर रचनात्मक कार्य करने के लिए समूह में चर्चा की। साथ ही मनरेगा के तहत होने वाले कार्यो पर विस्तार से चर्चा की। मैठानी की सदस्याओं ने शशीखाल से थात तराड़ वाली रोड पर गैस सिलेण्डर की गाड़ी को लगाने के लिए समूह के माध्यम से प्रस्ताव रखा। जिसमें सदस्याओं ने घचकोट कलस्टर में गठित सभी स्वयं सहायता समूह व क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों के सहयोग लेकर इस प्रस्ताव को गैस गोदाम रथखाल के कार्यालय में जमा करने की बात कही। जिसकी तैयारी फरवरी माह में क्लस्टर की समूहों की बैठकों में प्रस्ताव रख कर सहमति बनाकर तैयार की जायेगी।

श्रम उत्पाद के उत्पादन के लिए सदस्याओं को खेती करने के लिए प्रेरित किया गया। सदस्याओं को सामूहिक खेती करने के लिए प्रेरित किया गया। नैनीडांडा ब्लॉक में गठित स्वयं सहायता समूहों द्वारा सामूहिक खेती को बढ़ावा देने के लिये किये जा रहे प्रयासों को समूह में साझा किया गया। नवम्बर माह में जिन सदस्याओं ने मंच के माध्यम से श्रम उत्पाद बेचने के लिए दिया था उन सदस्याओं को भुगतान किया गया।

बाल मंच के पर्यावरण चेतना केन्द्रों की रिपोर्ट

दिनाँक	प्रात: 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)				सांय 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)			
	गिगड़े सल्ट	औलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट	गिगड़े सल्ट	औलेथ नैनीडांडा	चांच सल्ट	बल्यूली सल्ट
1 जनवरी	14	9	6	14	14	9.5	15	15
2 जनवरी	14	9.5	9	14	14	10	16	15
3 जनवरी	14	10	10	14	14	10.3	18	15
4 जनवरी	14	9.5	9	14	14	10	15	15
5 जनवरी	14	10	11	14	14	9.5	9	15
6 जनवरी	14	9	7	14	14	10	13	15
7 जनवरी	14	9.5	9	14	14	9	14	15
8 जनवरी	14	9	10	14	14	9.2	9	15
9 जनवरी	14	9	5	14	14	9.5	15	15
10 जनवरी	14	9.5	7	14	14	8.5	13	15
11 जनवरी	14	9	8	14	14	9.5	12.8	15
12 जनवरी	14	9	6	14	14	9	12	15
13 जनवरी	14	9.2	5	14	14	9.5	11	15
14 जनवरी	14	9.5	6.5	14	14	9	13	15
15 जनवरी	14	9	6	14	14	9.2	16	15
16 जनवरी	14	9.5	9.5	14	14	10	15	15
17 जनवरी	14	9.3	9	14	14	9	14	15
18 जनवरी	14	9	8	14	14	10	14	15
19 जनवरी	14	9.5	9	14	14	10.5	15	15
20 जनवरी	13	10	9	14	13	11	9	15
21 जनवरी	13	9.5	8	14	13	10	14	15
22 जनवरी	13	9	7	14	13	10	8.5	15
23 जनवरी	13	9.5		14	13	9		15
24 जनवरी	13	9		14	13	8		15
25 जनवरी	12	9.5		13.5	12	9		15
26 जनवरी	11	9		14	13	8.5		15
27 जनवरी	13	9.5		14	13	8.5		15
28 जनवरी	13	9		14	13	8		15
29 जनवरी	13	9.5		14	13	9		15
30 जनवरी	13	10		14	13	9.5		15
31 जनवरी	13	10		14	13	10		15

चाँच धारा विकास कार्यक्रम

30 जनवरी, 2022						
स्रोत का नाम	पी0एच0			टी0डी0एस0		
	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग
डौठा पानी नौला	6.5	6.5	6.5	23	23	23
धारा पानी	7	7	7	40	40	40
शिव मन्दिर नौला	7	7	7	46	46	46
हैंड पंप नौला	6.4	6.4	6.4	33	33	33

बजट 2022-23

स्वास्थ्य क्षेत्र के बजट में कटौती पर आपत्ति

✍बनजोत कौर

आम बजट 2022-23 में स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए जारी बजट आवंटन में बीते वर्ष की तुलना में 7 प्रतिषत की कटौती की गई है। सिविल सोसाइटी समूहों ने एक बयान जारी करके सरकार के इस कदम की निंदा की है। पूरे भारत में स्वास्थ्य पर काम कर रहे करीब 100 छोटे-बड़े सिविल सोसाइटी समूहों के नेटवर्क जन स्वास्थ्य अभियान (जे0एस0ए0) ने संसद से अपील की है कि वह इस कटौती को खारिज करे और विशेष तौर पर कोविड-19 के गंभीर परिणामों को देखते हुए स्वास्थ्य क्षेत्र के बजट आवंटन में बढ़ोतरी करे। जन स्वास्थ्य अभियान समूह ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिषन (एनएचएम) में अपर्याप्त बजट आवंटन को लेकर आपत्ति जताई है। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एनआरएचएम) और राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (एनयूएचएम) का संचालन एनएचएम के तहत की होता हैं, जो अधिकांश भारतीय आबादी की स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करता है।

पुराने दो बजटों का विश्लेषण करते हुए जे0एस0ए0 का कहना है कि 2021-22 में एनएचएम का वास्तविक खर्च रु0 37,080 करोड़ रूपये था, लेकिन इस साल केवल 37,000 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है। जिसमें 7,500 करोड़ रूपये बुनियादी ढांचे के विकास कार्य में लगाए जाने हैं, केवल 30,000 करोड़ रूपये प्राथमिक और माध्यमिक उपचार के लिए बचते हैं। जे0एस0ए0 का कहना है, यह आवश्यक था कि सरकार को सुरक्षित मातृत्व और सभी का टीकाकरण सुनिश्चित करने और महामारी के दौरान हुए नुकसान को नियंत्रण में करने के लिए विभिन्न रोग नियंत्रण कार्यक्रमों का विस्तार करने की दिशा में विशेष कदम उठाने चाहिए थे, इस जरूरत को नजरअंदाज किया गया है। बता दें कि जे0एस0ए0 की देश के 22 राज्यों में इकाइयाँ है। वहीं ऐसी कई रिपोर्ट है जो बताती हैं कि कोविड-19 के व्यवधानों के चलते बच्चों के टीकाकरण, मलेरिया और टीवी उल्मूलन कार्यक्रमों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

जे0एस0ए0 ने कहा है कि इतनी बड़ी संख्या में कोविड टीकाकरण हो सका तो इसका श्रेय आषा और ए0एन0एम0 कार्यकर्ताओं को जाता है, जिन्हें उनके बकाये तक का भुगतान नहीं किया गया है। एनएचएम के बजट में कटौती, आशा और ए0एन0एम0 कार्यकर्ताओं की मुआवजा प्रक्रिया को प्रभावित करेगी। जे0एस0ए0 ने प्रधामंत्री जन आरोग्य योजना (पीएमजेएवाय) को हुए आवंटन पर भी सवाल उठाए हैं। 2018 में जब से यह योजना अस्तित्व में आई है। तब से इस योजना में इसे आवंटित बजट की आधी ही राशि खर्च हुई है। 2021-22 में इस योजना के लिए 6,400 करोड़ रूपये का आवंटन किया गया था। लेकिन बाद में इसे संशोधित करके 3,199 करोड़ रूपये कर दिया गया, जबकि 2019-20 में इस योजना का वास्तविक खर्च 3,200 करोड़ रूपये रहा था। जे0एस0ए0 ने कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान देखा गया कि यह योजना गरीबों और वंचितों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने में विफल रही। साथ ही समूह ने मांग की कि इस योजना को समाप्त करके, इसके संसाधनों को जन स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत बनाने में उपयोग किया जाए।

यहाँ तक कि बाल पोषण और कुपोषण संबंधी कार्यक्रमों के बजट में भी कोई खास उन्नति नहीं देखी गई है। सक्षम आंगनबाड़ी और पोषण 2.0 अभियान में 150 करोड़ रूपये की मामूली बढ़ोतरी की गई है। इस योजना में आंगनबाड़ी सेवाएं, पोषण अभियान, किशोर बालिकाओं के लिए योजना, राष्ट्रीय शिशु पालन योजना जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम शामिल है। समूह ने जारी बयान में कहा है कि कोविड-19 महामारी के कारण महिलाओं और किशोरियों में प्रोषण प्रभावित हुआ है, जिस पर पर्याप्त ध्यान देने की जरूरत है।

बयान में यह भी कहा गया है कि बजट में महिला स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया गया है, जबकि दिखाया ऐसा गया है कि महिला स्वास्थ्य पर बहुत ज्यादा ध्यान दिया गया हो। संबल योजना महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बनाई गई है। जिसमें बलात्कार पीड़िताओं के लिए 'वन स्टॉप, वन सेंटर', महिला हेल्पलाइन, विधवा आवास जैसी योजनाऐं शामिल हैं, लेकिन इसमें भी बजट में कटौती की गई है, पिछले वर्ष इस योजना में 587 करोड़ रूपये का प्रावधान था, लेकिन इस बार आवंटन घटाकर 562 करोड रूपये कर दिया गया है। वहीं, महिला स्वास्थ्य और सषक्तिकरण के लिए बनी सामर्थ्य योजना में 100 करोड़ रूपये की मामूली वृद्धि की गई है।

स्वास्थ्य पर ध्यान देने के नाम पर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के भाषण में राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के लिए महज 40 करोड़ रूपये जारी किए गए। जे0एस0ए0 ने सवाल उठाया है कि जब जमीन पर स्वास्थ्य सेवाएं पर्याप्त नहीं है, तब डिजिटल स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने का औचित्य समझ से परे है।

पर्याप्त बजट आवंटन के अलावा जे0एस0ए0 ने अपने बयान में बजट दस्तावेज में पारदर्शिता की कमी की भी आलोचना की है। विशेष तौर पर एनएचएम का संदर्भ देते हुए कहा गया है कि एनएचएम के तहत संचालित सभी योजनाओं और कार्यक्रमों को इस बजट में एक ही मद में शामिल किया गया है, जिससे हमें यह स्पष्ट नहीं होता है कि एनयूएचएम, टीकाकरण और विभिन्न रोग नियंत्रण कार्यक्रमों के लिए कितनी राशि आवंटित की गई है। दूसरे शब्दों में समझें, तो यदि कोई यह जानना चाहता है कि बाल टीकाकरण के लिए कितनी राशि का प्रावधान है, तो वह नहीं जान सकेगा। एक और उदाहरण के तौर पर वे पी0एम0 केयर्स फंड का उदाहरण देते हैं कि कोई नहीं जानता है कि इससे कोविड-19 से संबंधित स्वास्थ्य देखभाल पर कितनी राशि खर्च की गई है। जे0एस0ए0 ने कहा, 'पी0एम0-केयर्स से संबंधित सभी फंडों को लोकतांत्रिक जवाबदेही के तहत लाया जाना चाहिए और जानकारी सार्वजनिक की जानी चाहिए।'

द वायर हिन्दी से साभार

बजट 2022-23

मनरेगा के बजट में कटौती क्यों?

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

केन्द्र सरकार द्वारा 2022-23 के आम बजट में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना (मनरेगा) के मद में 25 प्रतिशत की कटौती कर दी गयी है। इस बार बजट में मनरेगा के लिये रू0 73000 करोड़ दिये गये हैं जो मौजूदा वित्तीय वर्ष के संशोधित बजट रू0 98000 करोड़ से 25 प्रतिशत कम हैं। आश्चर्य की बात यह भी है कि बजट पेश करते हुए वित्त मंत्री के सम्बोधन में कहीं भी मनरेगा का जिक्र नहीं हुआ। ग्रामीण रोजगार कार्यकताओं ने इसे लापरवाह निर्णय बताते हुए कहा है कि सरकार ने मुश्किल समय में ग्रामीण रोजगार प्रदान करने वाली योजना के साथ बुरा बरताव किया है।

ज्ञातव्य है कि मनरेगा ग्रामीण परिवारों के लिये एक माँग आधारित रोजगार योजना है, जिसमें सरकार प्रत्येक ग्रामीण परिवार को वर्ष में कम से कम 100 दिन के रोजगार की गारन्टी देती है। 'हिन्दू' में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2020 में कोविड-19 के लॉकडाउन के दौरान जब रोजगार के अन्य साधन खत्म हो गये थे तब इस योजना के तहत 1.11 लाख करोड़ रुपये खर्च किये गये थे। जिसने ग्रामीण परिवारों को कोविड के दौरान जीने का जरिया दिया। उस दौरान देशभर में लगभग 11 करोड़ श्रमिक इस योजना से लाभान्वित हुए।

मनरेगा के बजट में यह कटौती तब की गयी है जब देश बेरोजगारी के गम्भीर हालातों का सामना कर रहा है और सरकार शहरी क्षेत्रों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के साधन जुटाने में असफल हुई है। विशेषज्ञों का कहना है कि पिछले बजट के मुकाबले 25 प्रतिशत कम बजट आवंटन से कई स्तर पर ग्रामीण परिवारों को परेशानी का सामना करना पड़ेगा जिसमें मजदूरी के भुगतान में देरी प्रमुख है। अभी मजदूरों को पिछले वर्ष की मजदूरी व सामाग्री का भुगतान भी पूरी तरह नहीं हुआ है। यह स्थिति इस बजट को बुरी तरह प्रभावित करेगी।

केरल के वित्त मंत्री के0 एन0 बालागोपाल का कहना है कि हमें पिछले साल की तरह इस वर्ष भी वित्त की कमी झेलनी पडेगी, जिससे मजदूरों के हित जुड़े हैं। इस कटौती पर मजदूर किसान शक्ति संगठन के निखिल डे का कहना है कि इस तरह का निर्णय इस कानून की हत्या करने जैसा है। इस कानून पर मजदूरों के साथ काम करने वाले विभिन्न सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि यही वह योजना है, जिसने कोविड के बुरे दौर में ग्रामीण आर्थिकी को बचाऐ रखा है। बजट में कटौती ग्रामीण परिवारों के जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव डालेगी।

कुल मिलाकर मनरेगा के बजट में कटौती ग्रामीण क्षेत्रों में में रोजगार की माँग को हतोत्साहित करेगी।

गले तक भ्रष्टाचार में डूबा पंचायती राज

✍विजय, ग्राम प्रधान, थला तड़ियाल

उत्तराखण्ड में 2019 में हुए पंचायती चुनावों में हमारे सल्ट ब्लॉक में बड़ी उम्मीदों के बीच चुनाव हुए और ज्यादातर ग्राम पंचायतों में युवा जन प्रतिनिधियों को नेतृत्व करने का मौका मिला। 2019 के चुनाव उम्मीद्वारों के लिये शैक्षणिक योग्यता व दो बच्चों की बाध्यता की शर्त की वजह से पिछले चुनावों से अलग थे। सल्ट ब्लॉक में ज्यादातर गांवों में युवा जन प्रतिनिधियों को मौका मिला। जनता द्वारा सोचा गया होगा कि 'युवा करेगा गांव का उद्धार'! अब वर्ष 2022 में यदि हम यह कहें कि 138 ग्राम पंचायतों वाले सल्ट ब्लॉक मे चुने गये ज्यादातर युवा जन प्रतिनिधि जनता की उम्मीदों पर खरे नही उतर पाये हैं तो गलत नहीं होगा। इसका मैं भी एक उदाहरण हूँ। मेरा ग्राम प्रधान पद पर चुनाव ग्रामवासियों की भारी उम्मीदों के बीच हुआ था पर मुझे नहीं लगता कि मैं उम्मीदों पर खरा उतर पा रहा हूँ। सल्ट ब्लॉक की अनेक समस्याएँ है जिनको उठाने में ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत व जिला पंचायत सदस्य असफल रहे हैं।

यदि ईमानदारी से विश्लेषण करें तो पता चलता है कि जन प्रतिनिधियों की असफलता की बड़ी वजह व्यवस्थागत खामियाँ हैं। ब्लॉक ऑफिसों में पसरे भ्रष्टाचार ने जन प्रतिनिधियों को लाचार कर दिया है। पूरा तन्त्र गले तक भ्रष्टाचार में डूबा है। वित्त के बजट से कार्यो की बात करें तो ग्राम पंचायत में बनी कार्ययोजनाओं में प्रस्तावित धनराशि पर 15 से 50 प्रतिशत तक कमीशन की माँग हो रही है। प्रधान संगठन की बैठकों में कई बार हमने यह मुद्दा उठाया पर संगठन की कमजोरी ही कहिये कि बात जस की तस है। इससे प्रधानों को अपनी पंचायतों में जवाब देना मुश्किल हो रहा है। यदि इन विषयों पर आवाज नही उठायी गई तो आगे ग्राम प्रधानों को कठिन समय देखने को मिलेगा।

अन्य व्यावहारिक समस्याएं भी हैं। मनरेगा जो मांग आधारित कार्यक्रम है, उसकी हालत भी खराब है। मेरे पद पर आने के बाद आज तक गॉवों में एक भी रोजगार दिवस नही मनाया गया है। ग्राम सभा में ज्यादात्तर पुरूष वर्ग रोजगार की तलाश में घरों से बाहर हैं। घरों में अधिकतर महिलाएं व 60 साल से ज्यादा उम्र के बुर्जुग है जो मनरेगा कार्यों में मजदूरी करते हैं। जिससे तय समय पर कार्य पूरा नही हो पाता और मनरेगा कार्य करवाने में प्रधानों को मुश्किलों का सामाना करना पड़ता है। साथ ही मनरेगा जे0ई0 द्वारा किये गए कार्यो की समय रहते एमबी न होने के कारण मिस्त्रियों का पैसे आने में देरी होती है। मनरेगा में पिछले लगभग 6 महिनों से पक्के कामों व मिस्त्रियों का पैसा नही आया है। कई ग्राम प्रधानों को मिस्त्रियों को पैसे अपनी जैब से देने पड़ रहे हैं।

इन सभी समस्याओं पर आवाज उठाने के लिये बना प्रधान संगठन भी पीछे हटता नजर आ रहा है। ग्राम सभाओं में इन विषयों पर बात करने की सख्त जरुरत है ताकि इस पर आगे संघर्ष की रणनीति तैयार की जा सके।

आपसे निवेदन है

प्रिय मित्रो नमस्कार!

श्रमयोग एक स्वैच्छिक संस्थान है जो विगत 10 वर्षों से भारत वर्ष के उत्तराखण्ड राज्य में पहाड़ी जिलों अल्मोड़ा एंव पौड़ी गढ़वाल में कार्य कर रहा है। हम स्थानीय समुदाय को मजबूत सामाजिक पूंजी के निर्माण के लिये जन संगठनों में संगठित होने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। श्रमयोग के प्रयासों से पिछले 10 वर्षों में लगभग 80 गाँवों में विशेषकर महिलाओं व बच्चों ने अपने आप को समुदाय आधारित संगठनों में संगठित किया है और आज ये संगठन स्थानीय मुद्दो पर अपनी आवाज मुखरता से उठा रहे हैं। आज ये संगठन ``श्रम-जन स्वराज अभियान'' व ``प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' के अन्तर्गत पंचायती राज सशक्तिकरण, स्थानीय संसाधन आधारित आजीविका संवर्धन एंव जल-जंगल-जमीन व जैव विविधता संरक्षण के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं।

श्रमयोग इन सब गतिविधियों के संचालन हेतु किसी सरकारी एंव गैर सरकारी स्त्रोत से आर्थिक मदद नहीं लेता, सभी गतिविधियां जन सहयोग से चलती हैं। संस्था जमीन से जुडकर जमीनी मुद्दों पर कार्य कर रही है। जिसका प्रभाव हमारे कार्यक्षेत्र में देखा जा सकता है किन्तु संसाधनों के अभाव में कार्यक्रम का विस्तार एक चुनौती है। क्योंकि कार्यक्रम को सुगम बनाने एंव अभियान को लगातार चलाने हेतु न्यूनतम मानव संसाधनों कि आवश्यकता होती हैं जिन्हें अपने जीवनयापन हेतु एक न्यूनतम नगद आय की आवश्यकता होती है।

लम्बे अनुभव के बाद हमने इस चुनौती से निपटने का एक वैकल्पिक रास्ता खोजा है - ``श्रम सखी''। श्रम सखी 9-10 गावों के बीच एक ऐसी स्थानीय सक्रीय महिला है, जो अभियानों की गतिविधियों को अपना अतिरिक्त समय देती हैं। क्योंकि महिने में अपने समय का एक बडा हिस्सा ये महिलाएं अभियानों को देती हैं, अत: स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर हमने यह तय किया कि इन महिलाओं का निश्चित मासिक मानदेय होना चाहिए, जो रू0 2000 मासिक तय है। वर्तमान में 7 श्रम सखियां अभियानों से जुड़ी हैं। जो अपने घरेलू काम के साथ अभियानों की गतिविधियों में सहयोग कर अपने परिवार के लिए नगद आय भी जुटाती हैं। आर्थिक रुप से कमजोर परिवारों से आने वाली इन श्रम सखियों को मिलने वाली यह नियमित मासिक आय उनके परिवारों को मजबूती देती है। अपने इस काम से इन महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है और इन्हें समाज में पहचान मिली है।

आपसे निवेदन है कि आप एक श्रम सखी के लिये आर्थिक सहयोग कर इन्हें आगे बढ़ने में सहयोगी बनें। हम इसके लिये आपसे श्रमयोग को रू0 2,000 मासिक आर्थिक मदद करने का निवेदन करते हैं। अपनी क्षमता के अनुरुप सहयोग करें। आपका सहयोग इस अभियान के विस्तार में सहयोगी होगा।

धन्यवाद

टीम श्रमयोग।

बाल मंच का पृष्ठ

इस पृष्ठ में श्रमयोग के ``प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान'' से निकली जानकारियों के साथ-साथ बाल मंच की गतिविधियों एवं बाल मंच के सदस्यों की अभिव्यक्तियों को स्थान दिया जाता है। एवं बच्चों से सम्बन्धित लेखन को स्थान दिया जाता है।

-सम्पादक

मानव सभ्यताओं का ज्ञान-विज्ञान-2

✍शंकर दत्त, श्रमयोग

आज से लगभग 20 लाख साल पहले हम सब एक तरह से रहते थे। हम सब मतलब मनुष्य, मछली, गुरिल्ला, जुगनु, कीड़े-मकोड़े आदि-आदि। एक तरह से का क्या मतलब हुआ? यही कि हाथी अपनी तरह से रहते थे और मनुष्य अपनी तरह से। किसी पर किसी का अनियन्त्रित बाहरी प्रभाव नहीं था। सभी प्राकृतिक नियमों से अपना जीवन जीते थे। हाँ बहुत सी प्रजातियों की मातायें तब भी अपने बच्चों को सीने पर लगाये रहती थीं, चिन्ता करती थीं, युवा गुस्सैल और बुजुर्ग थके हुवे थे। युवा सुन्दरियों को प्रभावित करने के लिए अपनी ताकत का प्रदर्शन करते थे। इस समय में मनुष्य एक दूसरे से प्रेम करते थे। आखेट और खेल करते थे और सम्मान, हैसियत एवं सत्ता के लिए होड़ करते थे लेकिन समझने वाली बात यह है कि यही सब अन्य जीव जैसे हाथी, लंगूर, बिल्ली आदि भी किया करते थे।

तब यह बिल्कुल पता नहीं था कि आधुनिक मनुष्य चाँद पर घर बसाने की योजना बनायेगा।

आगे बढ़ने से पहले हमें प्रजातियों को समझना पढ़ेगा। अगर कोई जीव या प्राणी एक दूसरे के साथ सहवास करने हेतु प्राकृतिक रूप से प्रवृत होते हैं और ऐसी सन्तानों को जन्म देते हैं जो प्रजननशील हो मतलब, सन्तानोत्पत्ति हेतु प्राकृतिक रूप से सक्षम हों तो यह एक प्रजाती हुई। इसे एक उदाहरण से समझते हैं। घोड़े और गधे के पूर्वज एक थे। इनके कई शारीरिक लक्षण भी मिलते हैं किन्तु ये प्रजनन के लिए एक दूसरे में कोई दिलचस्पी नहीं रखते, मतलब सहवास हेतु प्राकृतिक रूप से आकर्षित नहीं होते। यदि अप्राकृतिक रूप से जबरदस्ती इनका सहवास कराया जाय तो परिणाम स्वरूप खच्चर पैदा होता है। किन्तु खच्चर प्रजनन नहीं कर सकते। इसलिए घोड़े और गधे के डीएनए जो हमारा अनुवांषकीक द्रव्य है कभी भी नहीं मिलाया जा सकता। इसलिए दोनों का जीन पूल या शारीरीक विकास क्रम की दो अलग धारायें है। ये दो प्रजातियाँ हुई।

दूसरा उदाहरण कुत्तों का है। बुलडॉग और भोटिया कुत्ते देखने में बिलकुल अलग हैं किन्तु ये प्राकृतिक रूप से सहवास के लिए तैयार रहते हैं और इनके बच्चे भी आपस में सन्तानोत्पत्ति के लिए सक्षम होते हैं। मतलब ये एक ही जीन पूल साझा करते है। ये एक ही प्रजाति हुई। जिन प्रजातियों का विकास एक साझा पूर्वज से होता है उन्हें जीनस कहते है। जैसे बिल्ली, चीता, शेर, बाघ, तेंदुवा, पैन्थेर जीनस के अन्तर्गत आने वाली विभिन्न प्रजातियाँ है। मतलब इनके पूर्वज एक ही थे।

लेकिन भाषा के वर्गीकरण में प्राणियों को दोहरे नाम से लिखते हैं। पहले जीनस फिर प्रजाती जैसे शेर को पैन्थेरा लेयो कहते है। पैन्थेरा जीनस है। पूर्वज और प्रजाती लेयो। मतलब सन्तानोत्पत्ति हेतु एक से सक्षम जीव।

जीनस या जीनेरा को फिर परिवार में बांटा गया है जैसे शेर, चीता, बिल्ली सभी कैट परिवार हैं व भेड़िये, लोमड़ी, सियार सभी कुत्ते परिवार से हैं। परिवार का मतलब इनकी प्रारम्भिक माता-पिता एक ही थे। इसी तरह होमो सेपियन्स का एक परिवार है। जिसे ग्रेट-एरस के नाम से जानते हैं। हमारे परिवार का हिस्सा चिपांजी, गोरिल्ला और औरांग उटांग हैं। हमारे सबसे करीबी रिश्तेदार चिपांजी हैं। मतलब ये कि लगभग 60-70 लाख वर्ष पहले एक बन्दर की दो बेटियाँ हुई एक चिपांजी की ग्रेट नानी है और एक हमारी।

क्रमशः

टीकाकरण

कोविड से बचाव हेतु सबसे सुरक्षित हथियार

टीके की कार्य प्रणाली:

यह शरीर के अंदर रोगों से लड़ने वाली प्रक्रिया को बढ़ाता है एंव वायरस से लड़ने के लिए शरीर में एन्टीबॉडी बनाता है। टीकाकरण गंभीर संक्रमण से बचाव करता है। टीकाकरण से बड़ी संख्या में लोगों को कोरोना से बचाया जा सकता है।

टीकाकरण पश्चात लक्षण:

टीके से कुछ लोगों पर सामान्य सा रिएक्सन हो सकता है। जैसे बांह या सिर में दर्द होना, हल्का बुखार आना, ठंड, थकान या कमजोरी महसूस होना, सिर चकराना या मांसपेशियों में दर्द होना। परंतु यह सब थोडे समय में ही ठीक हो जाता है।

विशेष सावधानी:

ऐसे व्यक्ति जिन्हें पहले कभी रक्त श्राव की समस्या हुई हो, खून की कमी हो, किसी प्रकार का रक्त विकार हो या खून में प्लेटिलेट्स की संख्या कम हो उनको टीकाकरण के लिए किसी डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। आवश्यकता होने पर खून जाँच कराऐं और उसके बाद डॉक्टर की सलाह के अनुसार टीका लगवाये।

कोरोना का टीका कब लगवाना चहिए:

- संक्रमित व्यक्तियों को ठीक होने का इंतजार करना आवश्यक है, संक्रमण में टीका लगवाना हानिकारक साबित हो सकता है। ठीक होने के 12 सप्ताह बाद ही टीका लगवाना सबसे उपयुक्त होता है।
- टीकाकरण दो बार करवाना होता है। पहले टीके के बाद 12 से 16 सप्ताह के बाद ही दूसरा टीका लगवाना चाहिए।
- यदि पहला टीका लगने के बाद संक्रमण हो जाता है तो ठीक होने के 12 सप्ताह बाद ही दूसरा टीका लगवाना चाहिए।
- महिलाओं को मासिक धर्म के समय या उसके तुरंत पहले या तुरंत बाद (2 से 3 दिन अंतर तक) टीका नहीं लगवाना बेहतर होता है। इस समय शरीर में कमजोरी महसूस होती है।
- गर्भवती महिलाओं को टीका नहीं लगाना चाहिए।
- स्तनपान कराती मातायें टीका लगवा सकती हैं।

जन जागरुकता अभियान
लोक विज्ञान संस्थान, देहरादून

ई-कचरा प्रबन्धन

एक कदम स्वच्छ पर्यावरण की ओर

ई-कचरा क्या है?

अनुपयोगी इलैक्ट्रॉनिक एवं इलैक्ट्रिक सामान जैसे कंप्यूटर, सी0पी0यू0, प्रिन्टर, की-बोर्ड, माउस, मोबाइल फोन, चार्जर, डिस्क, रेडियो, टेलीविजन, एयर कंडीशन, एल0ई0डी0 बल्ब इत्यादि ई-कचरा कहलाता है।

क्या आप जानते हैं?

हमारा देश अमेरिका, चीन, जापान व जर्मनी के बाद दुनिया का पॉचवां सबसे ज्यादा ई-कचरा पैदा करने वाला देश है। वर्ष 2019 में हमारे देश में 53.6 मिलियन टन ई-कचरा पैदा हुआ, जिसमें से सिर्फ 17 प्रतिशत ई-कचरा ही रीसायकल किया जा सका। ई-कचरे का उचित प्रबन्धन न होने से यह न सिर्फ पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, इससे मनुष्यों में स्वास्थ सम्बन्धी अनेक समस्याएँ भी पैदा होती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने वर्ष 2016 में ई-कचरे के प्रबन्धन के लिये दिशा निर्देश जारी किये, जिसमें सम्बन्धित पक्षों की निम्न जिम्मेदारियां तय की गई हैं।

ई-कचरे के बारे में सम्बन्धित पक्षों की जिम्मेदारियां

- किसी भी इलैक्ट्रॉनिक एवं इलैक्ट्रिक सामान के उत्पादक अपने उत्पाद के ई-कचरा बनने पर उसे उपभोक्ता से वापस लेंगे।
- इलैक्ट्रॉनिक एवं इलैक्ट्रिक सामान के दुकानदार अपने प्रतिष्ठान में ई-कचरा वापस लेने की व्यवस्था करेंगे व ई-कचरे के एवज में योजनानुसार उपभोक्ता को धनराशि का भुगतान करेंगे।
- क्लेक्शन सेन्टर उत्पादक, रीसायकलर अथवा डिसमेन्टलर की तरफ से ई-कचरा एकत्र कर सकेंगें व ई-कचरे का उचित मूल्य उपभोक्ता को देंगे।
- उपभोक्ता की जिम्मेदारी है कि ई-कचरे को क्लेक्शन सेन्टर में जाकर जमा करें।

हम अपने जिले को ई-कचरा मुक्त जिला बनायेंगे। इसलिये विकास खण्ड स्तर पर चार ई-कचरा क्लेक्शन सेन्टर खोले जा रहे हैं। आपसे निवेदन है कि आप अपना ई-कचरा क्लेक्शन सेन्टर पर ही दें एवं ई-कचरे का उचित मूल्य प्राप्त करें।

निवेदक
सोसायटी ऑफ पॉल्यूशन एवं ऍनवायरमेण्ट कन्जर्वेशन सांइटिस्ट्स
115, किशन नगर, देहरादून

शानदार रही हमारी देहरादून यात्रा

भ्रमण दल के सदस्य।

✍रेनुका, सल्ट

पिछले कई वर्षो से स्पेक्स देहरादून में हमारे कार्यक्षेत्र के बच्चों के लिये विद्यालयों में गर्मियों व सर्दियों की छुट्टियों के दौरान शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन करता आ रहा है। इस बार इस भ्रमण दल में मेरा भी चयन हुआ। मैं बहुत उत्साहित थी। तीन जनवरी को प्रात: हमारी टीम देहरादून के लिये निकल पड़ी। हमारे दल में कक्षा 7 से 9 तक के छात्र-छात्राएं, नुक्कड़ टीम के सदस्य व श्रमयोग से राकेश व मैं शामिल थे। हम सभी 32 लोग थे। यात्रा शुरू करने से पहले सभी का तापमान लिया गया, सभी लोग सामान्य थे। हम निकल पड़े। हालांकि मेरी देहरादून की यह दूसरी यात्रा थी, लेकिन इस बार मेरे साथ मेरी कुछ जिमेदारियां भी साथ चल रहीं थीं, जिससे मैं थोड़ा चिंता में भी थी, किंतु सारे बच्चे उत्साहित थे। सफर में हम जिम कार्बेट पार्क को देखते गये, रामनगर में हमारी बस में कुछ खराबी आ गयी जिससे हमें बस बदलनी पड़ी। हम आगे बढ़े। हमने नगीना में एक ढाबे पर खाना खाया जो बहुत अच्छा था। आगे हम पहुँचे हरिद्वार। अन्धेरा हो चुका था। रात का समय था तो पूरा शहर रोशनी से जगमगा रहा था। सामने एक बहुत बड़ी शिव मूर्ती दिखी और साथ में बहती गंगा नदी, जिसे देखकर बच्चे बहुत खुश थे। कुछ देर बाद हम लोग देहरादून में कंडोली स्थित स्पेक्स के कैम्पस में पहुँच गये। वहाँ स्पेक्स की टीम से चंद्रा दी, अशोक भैया, रामतीरथ भैया व राहुल भैया ने सभी बच्चों का स्वागत किया और फिर से सबका एक बार तापमान लिया गया। सब स्वस्थ थे।

चार जनवरी को सुबह सभी लोग 6 बजे उठ गये थे, सभी ने साथ में चाय पी, फिर सभी छत पर गये और योगा किया, उसके बाद परिचय सत्र किया गया। चन्द्रा दी व रामतीरथ भैया ने स्पेक्स के बारे में हम सब को बताया। फिर सभी बच्चों को तीन समूहों में बांटा गया, जिनकी हर दिन की अलग-अलग जिमेदारियां थी। उसके बाद हमने नाश्ता किया। प्रात: 9 पर हम अपनी यात्रा पर निकल पड़े। सबसे पहले हम भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान पहुँचे। वहां विशेषज्ञों द्वारा हमें अनेक तरह के पेड़-पौधों की जानकारी दी गयी। मैंने लेंटाना (कूरी) के बारे में जाना कि वह एक इनवेजिव प्लांट है जो अपने आस-पास दूसरे पौधों को नहीं होने देता। साथ-साथ पाइन, चीनार, सीता अशोक, व कुछ औषधीय पौंधे भी देखे। उसके बाद हम मानव विज्ञान संग्रहालय गये। वहां हमे डॉ0 सुक्रान्तो बोहरा जी ने जनजातीय क्षेत्रों, जौनसारी, बोक्सा, राजी जनजाति की प्राचीन वस्तुओं के बारे में बताया जो अब समाप्ति की ओर हैं। अन्त में हम वन्य प्राणी संस्थान गये जहां हमें अनेक प्रकार के जीव जतुंओं के बारे मे जानकारी मिली और फिर हम सभी वापस कैम्पस में लौट आये।

दूसरे दिन नाश्ता करने के बाद हम कोविड-19 गाइडलाइन और नियमों का पालन करते हुए विज्ञान धाम पहुँचे। वहां अंकित कन्डियाल जी द्वारा हमें हिमालयन गैलरी और भौतिक गैलरी की जानकारी दी गई। वहां वैज्ञानिकों की स्मृतियां तथा उनके दिये गये सिद्धान्त लिखे थे। हमने भोजन किया उसके बाद पर्यावरण से संबंधित नुक्कड़ नाटक और थ्रीडी फिल्म देखी। थ्रीडी फिल्म मैंने पहली बार देखी।

तीसरे दिन कोविड के नये वैरियेंट ओमाइक्रोन के तेजी से फैलने की खबरें आ रही थी जिस कारण हम कंडोली से बाहर नहीं गये, और गांव का ही भ्रमण किया। हमने अलग-अलग प्रकार के पेड़-पौंधे देखे और विश्रान्ति रिसॉर्ट देखने गये। वहां हमने अनेक प्रकार के पक्षियों को देखा जो विदेशी प्रजाति के थे। उसके बाद हमने गांव देखा, वहां खेतों में फसल लगी थी पशुपालन भी काफी मात्रा में था। भोजन करने के बाद हमें सौम्या डबराल जी ने क्रियेटिव आर्ट के अन्तर्गत खराब बोतलों का इस्तेमाल कर रोजगार के अवसर बनाने की जानकारी दी। रामतीरथ जी ने बांस के बने लैम्प के बारे में बताया। लैक्टोमीटर, वर्षामापी, एल्कोहल मापी आदि यंत्रों के बारे में भी जानकारी दी गयी। उसके बाद बच्चों ने पूरी दिन की गतिविधियों का अखवार बनाया तथा उनको चार्ट पर लगाया। अन्त में सभी से विजिट से जुड़े फीडबैक लिए गये व बच्चों के उज्वल भविष्य की कामना करते हुए कार्यक्रम को समाप्त किया गया। रात्रि भोजन के बाद हम सब सल्ट के लिये निकल पड़े।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक शंकर दत्त ने नौटियाल प्रिंटर्स ग्राम माजरी माफी, मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित कर ग्राम श्यामपुर, पो0 अम्बीवाला, प्रेमनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।

सम्पादक-अजय कुमार

सभी पद अवैतनिक हैं।

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा)